वार्षिक 300/– रूपए
Website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ–28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हिन्दू विश्व

दिसम्बर (01–15), 2021

राम से बड़ा राम का नाम

इंदौर में खण्ड समिति के सम्मेलन को सम्बोधित करते
विहिप महामंत्री मिलिन्द पराण्डे जी तथा सम्मेलन में उपस्थित विहिप के दायित्ववान कार्यकर्ता

महाराष्ट्र में दिनाँक १२ नवम्बर को हुई
हिंसा के विरोध में विहिप के महामंत्री माननीय मिलिंद जी परांडे की नागपुर में पत्रकार वार्ता

वाराणसी में संस्कृति संसद कार्यक्रम
को संबोधित करते विहिप कार्याध्यक्ष
आलोक कुमार

कानपुर में सामाजिक समरसता के द्विदिवसीय प्रशिक्षण
वर्ग को सम्बोधित करते विहिप केन्द्रीय मंत्री
श्री देवजी भाई रावत

हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

यज्ञीय गुणों से युक्त प्रशंसनीय हे अग्निदेव। आप देवताओं के प्रीतिपात्र और महान गुणों के प्रेरक हैं। यहाँ उपयुक्त स्थान पर पधारें और प्रज्ज्वलित हों। घृत की आहुतियों द्वारा दर्शन योग्य तेजस्वी होते हुए सघन धूम्र को विसर्जित करें। - ऋग्वेद

दिसम्बर 01-15, (2021)
मार्गशीर्ष कृष्ण - शुक्ल पक्ष
आनंद संवत्सर
वि. सं. -2078, युगाब्द - 5123

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी
सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. - 7217685539
परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा,
धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार
व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. - 09582555152
प्रचार प्रसार प्रमुख
रामपाल सिंह
मो. - 09211792710
सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495
hinduvishwa@gmail.com

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए वार्षिक डाक व्यय सहित	$ 75 USD
एक प्रति	15/-
वार्षिक	300/-
त्रिवर्षीय	750/-
पंचवर्षीय	1,200/-
दसवर्षीय	2,250/-
पन्द्रह वर्षीय	3,100/-

वैधानिक सूचना
- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

@eHindu Vishwa
@eHindu Vishwa
@eHindu Vishwa
कुल पेज - 28

अयोध्या और हिन्दुत्व : काँग्रेस हो गयी बेनकाब	08
इमरान का मंत्री या मसखरा!	11
बुंदेलखण्ड की अयोध्या 'ओरछा'	13
स्वर्गीय आनंदशंकर जी	15
अफगानिस्तान को लेकर भारत की कूटनीति कामयाबी	16
महारानी चेनम्मा	18
लाभदायक है सौंफ	21
आजादी का अमृत महोत्सव निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं का सम्मान	22
रसायन मुक्त खेती के लिए गो कृपा अमृतम कल्चर का निःशुल्क वितरण आरंभ	23
वाराणसी में सँस्कृति संसद 2024 से पहले खत्म हो मंदिरों से सरकारी अधिग्रहण : आलोक कुमार	24
गौ आधारित कृषि से ही गौमाता की रक्षा होगी और राष्ट्र भी समृद्ध होगा	25
उत्तराखंड प्रांत का धर्म रक्षा निधि समर्पण कार्यक्रम	26

हिन्दू विश्व विज्ञापन रेट लिस्ट

अंतिम आवरण पृष्ठ	50,000/-
आवरण पृष्ठ द्वितीय एवं तृतीय	35,000/-
पूर्ण पृष्ठ रंगीन	25,000/-
पूर्ण पृष्ठ ब्लैक एण्ड व्हाइट	10,000/-

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

मन्दिर
सरकारी नियंत्रण से मुक्त हों

नवम्बर के प्रथम सप्ताह में प्रधानमंत्री श्री नरेंद मोदी ने केदारनाथ में अपने संबोधन में कहा कि उन्होंने अपनी आँखों से देखा है कि जब तीर्थयात्री संकट काल में वहाँ के पंडों के घर शरण लेने के लिये आते थे, तो पंडों का पूरा परिवार बाहर सोता था, ठंढ और शीत झेलता था और वे यात्रियों को अपने घर में स्थान देते थे। प्रधानमंत्री की यह उक्ति भारत के प्राचीन तीर्थों और बड़े मंदिरों की परंपरा से जुड़े धार्मिक लोगों की श्रद्धा और त्याग का साक्ष्य है। इतना ही नहीं, तो जब तीर्थयात्रियों के पास कभी धन का अभाव हो जाता था, तो वे पंडों से रुपए उधार लेकर अपना काम चला लेते थे, तीर्थयात्री अपने घर पहुँचकर पंडा बाबा का पैसा, उन्हें वापस मनी ऑर्डर कर देते थे। यह आज भी बहुत से तीर्थों में यथावत प्रचलित है। आज भी तीर्थों में लोग पंडों के घर में रुकते हैं, उनके घर का भोजन करते हैं। बदले में जो मन में आए, उतना ही दान–दक्षिणा देकर विदा हो जाते हैं, कोई मूल्य निर्धारण कभी नहीं होता है।

यह परम्परा तब की थी, जब मंदिरों पर सरकारों का कब्जा नहीं हुआ था। तीर्थयात्रियों और पंडों के बीच एक सहज पारिवारिक प्रेमपूर्ण सम्बंध था। तीर्थों के पंडे अपने क्षेत्र के यजमानों के घर वर्ष में एक बार अवश्य जाते थे। पूर्व परिचित होने के करण, उनके घर रुकने में सहजता का अनुभव करते थे। यह परिचय न होने पर भी धर्म का नाता तो होता ही था। अब भी यह परम्परा है, किन्तु अपनी क्षीण अवस्था में है।

मंदिरों का सरकारी अधिग्रहण हो जाने से पंडों और तीर्थयात्रियों के मध्य का सम्बन्ध धीरे–धीरे कमजोर होने लग गया। शिथिल होते सम्बन्धों को हिन्दू विरोधियों के हिन्दू धर्मद्वेष ने और कमजोर बनाया। आज आवश्यकता है कि हमारे सभी सनातन मन्दिरों को सरकारी कब्जे से मुक्त किया जाए। भक्तों और भगवान के बीच भगवान के सेवकों की यह सेवकाई एक मजबूत सामाजिक जोड़ का काम करती है, जिसकी आज पहले से अधिक आवश्यकता है। आज क्षीण होते सामाजिक ढाँचे और बढ़ते मतान्तरण की आँधी के मध्य उपरोक्त व्यवस्था संजीवनी का काम करेगी, जब पंडे देश में घुम–घूमकर धर्मजागरण का काम करेंगे।

मंदिरों का सरकारी नियंत्रण से मुक्त होना अति आवश्यक है। सभी राज्य सरकारों को और केंद्र सरकार को तत्काल इन्हें सरकारी नियंत्रण से मुक्त करना चाहिए। मन्दिर तो भारत के सनातन समाज की धरोहर हैं। मंदिरों पर सरकारी नियंत्रण करके भारतीय सामाजिक तंत्र के तानेबाने को कमजोर किया गया है। भारत को मजबूत करने के लिए, मंदिरों को नियंत्रित करने के सभी कानून तत्काल निरस्त करना चाहिए।

मंदिरों का सरकारी नियंत्रण से मुक्त होना अति आवश्यक है। सभी राज्य सरकारों को और केंद्र सरकार को तत्काल इन्हें सरकारी नियंत्रण से मुक्त करना चाहिए। मन्दिर तो भारत के सनातन समाज की धरोहर हैं। मंदिरों पर सरकारी नियंत्रण करके भारतीय सामाजिक तंत्र के तानेबाने को कमजोर किया गया है। भारत को मजबूत करने के लिए, मंदिरों को नियंत्रित करने के सभी कानून तत्काल निरस्त करना चाहिए।

श्रीराम नाम की महिमा भारी

प्रो. डॉ. विजय वशिष्ठ
सेवानिवृत्त प्राचार्य, कॉलेज शिक्षा-राजस्थान

भगवान श्रीराम से ज्यादा भगवान श्रीराम के नाम की महिमा है। श्रीरामरक्षास्त्रोतम् के श्लोक 34 में श्री महादेव जी, पार्वती जी से कहते हैं:–

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे
सहस्त्रनाम ततुल्यं रामनाम वरानने।। 34।।

हे सुमुखि! रामनाम विष्णु सहस्त्रनाम के तुल्य है। मैं सर्वदा राम, राम, राम इस प्रकार मनोरम रामनाम में रमण करता हूँ। इसी प्रकार रामरक्षास्त्रोतम् के ही 36वें श्लोक में कहा गया है–'राम–राम' ऐसा घोष करना सम्पूर्ण संसार बीजों को भून डालने वाला, समस्त सुख सम्पत्ति की प्राप्ति कराने वाला तथा यमदूतों को भयभीत करने वाला है। तुलसीदास रामचरित मानस के बालकाण्ड में लिखते हैं:–

बंदउँ नाम राम रघुवर को। हेतु कृसानु भानुहिमकर को।
बिधि हरिहर मंत्र बेद प्रान सो। अगुन अनुपम गुणनिधान सो।।

मैं श्रीरघुनाथ जी के नाम राम की वंदना करता हूँ, जो कृशानु (अग्नि), भानु (सूर्य) और हिमकर (चन्द्रमा) हेतु अर्थात 'र', 'आ' और 'म' रूप से बीज हैं। वह 'राम' नाम ब्रह्मा, विष्णु और शिवरूप है। वह वेदों का प्राण है, निर्गुण उपमा रहित और गुणों का भण्डार है।

महामंत्र जोइ जपत मेहसू। कासी मुकुति हेतु उपदेसू।।
हिमा जासु जान गनराऊ। प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ।।

जो महामंत्र है, जिसे महेश्वर श्रीशिवजी जपते हैं और उनके द्वारा जिसका उपदेश काशी में मुक्ति का कारण है तथा जिसकी महिमा को गणेशजी जानते हैं, जो इस राम नाम के प्रभाव से ही सबसे पहले पूजे जाते हैं।

जान आदि कवि नाम प्रतापू। भभऊ सुद्ध करि उलटा जापू।।
सहस नाम सम सुनि सिवबानी। जपि जेईं पिय संग भवानी।।

आदि कवि श्री वाल्मिकी जी राम नाम के प्रताप को जानते हैं, जो उल्टा नाम (मरा–मरा) जपकर पवित्र हो गये। शिवजी के इस वचन को सुनकर कि एक राम नाम सहस्त्र नाम के समान है, पार्वती जी सदा अपने पति के साथ राम नाम जप करती रहती हैं। तुलसीदास जी लिखते हैं कि समझने में नाम (राम का नाम) एवं नामी (भगवान राम स्वयं) दोनों एक से हैं, लेकिन दोनों में परस्पर स्वामी और सेवक के समान प्रीति है। प्रभु श्रीराम जी अपने राम नाम का ही अनुगमन करते हैं। नाम लेते ही वहाँ आ जाते हैं।

जपहिं नामु जन आरत भारी। मिटिहिं कुसंकट होहिं सुखारी।।
राम भगत जग चारि प्रकाशा। सुकृती चारिउ अनघ उदारा।।

जो अर्ति भगत नाम जप करते हैं, तो उनके बड़े भारी संकट मिट जाते हैं और वे सुखी हो जाते हैं। जगत में चार प्रकार के (1) अर्थार्थी–धन आदि की चाह से भजने वाला, (2) अर्ति–संकट की निवृत्ति के लिए भजने वाला, (3) जिज्ञासु–भगवान को जानने की इच्छा से भजने वाला, (4) ज्ञानी–भगवान को तत्व से जानकार स्वाभाविक ही प्रेम से भजने वाला–रामभक्त है और चारों ही पुण्यात्मा, पाप रहित और उदार हैं। अर्थात राम नाम का जप किसी भी स्थिति में करें–उत्तम फल देने वाला है। कलियुग में विशेष रूप से 'राम' को छोड़कर दूसरा कोई उपाय भी नहीं है।

राम भगत हित नर तनुधारी। सहि संकट किए साधु सुखारी।।
नाम सप्रेम जपत अनयासा। भगत होहिं मुद मंगलवासा।।

तुलसीदास जी कहते हैं–श्रीराम ने भक्तों के हित के लिए मनुष्य शरीर धारण करके, स्वयं कष्ट सहकर साधुओं को सुखी किया, परन्तु भगत जन प्रेम के साथ नाम का जप करते हुए सहज ही में आनंद और कल्याण के घर हो जाते हैं।

सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू।।

श्री हनुमान जी ने राम के पवित्र नाम का स्मरण करके श्रीराम जी को अपने बस में कर रखा है। तुलसीदास जी कहते हैं कि कलयुग में केवल राम का नाम ही कल्पवृक्ष है–जो स्मरण करते ही संसार के सब जंजालों का नाश करने वाला है।

नहिं कलि करम न भगति बिबेकू। राम नाम अवलंबन एकू।।
कालनेमि कलि कपट निधानू। नाम सुमति समरथ हनुमानु।।

कलियुग में न कर्म है, न भक्ति है और न ज्ञान ही है, राम नाम ही एक आधार है। कपट की खान कलियुग रूपी कालनेमि को (मारने के लिए) राम नाम ही बुद्धिमान और समर्थ श्री हनुमान है। राम का नाम किसी भी भाव से–अनेक भाव (प्रेम) से, बुरे भाव (बैर) से, क्रोध से या आलस्य से किसी भी तरह से नाम जपने से दसों दिशाओं में कल्याण ही होता है। महाराज दशरथ, राम के पिताश्री थे, लेकिन उनके अंत समय में श्रीराम पुत्र होते हुए भी वहाँ उपस्थित नहीं थे। लेकिन गिद्धराज जटायु का दाह संस्कार भगवान श्रीराम ने स्वयं अपने हाथों से किया, क्योंकि गिद्धराज जटायु भगवान श्रीराम के नाम का जप करते थे।

सबरी को नवधा भक्ति का उपदेश करते हुए भगवान ने स्वयं कहा – पहली भक्ति है संतों का सत्संग, दूसरी भक्ति है मेरी कथा–प्रसंगों में प्रेम, तीसरी भक्ति है–अभिमान रहित होकर गुरू के चरण कमलों की सेवा और चौथी भक्ति यह है कि कपट छोड़कर मेरे गुण समूहों का गान करें, मेरे (राम) मंत्र का जाप और मुझ में दृढ़ विश्वास–यह पाँचवी भक्ति है, जो वेदों में प्रसिद्ध है। छठी भक्ति है–इन्द्रियों का निग्रह, सातवीं भक्ति है जगत् भर को समभाव से मुझमें ओत–प्रोत (राममय) देखना और संतों को मुझसे भी अधिक करके मानना। आठवीं भक्ति है जो कुछ मिल जाय उसी में संतोष करना और स्वप्न में भी पराये दोषों को न देखें, नवीं भक्ति है सरलता और सबके साथ कपट रहित बर्ताव करना, हृदय में मेरा भरोसा रखना और किसी भी अवस्था में हर्ष और विषाद का न होना। इन सबमें सबसे श्रेष्ठ एवं सरल

है ''राम नाम का जाप''। भगवान के नामों में सबसे बड़ा नाम 'राम' है। इस संबंध में भगवान राम एवं नारद संवाद महत्वपूर्ण है। नारद जी भगवान से कहते हैं –

जद्यपि प्रभु के नाम अनेका। श्रुतिकह अधिक एक तें एका।।
राम सकल नामन्ह तें अधिका। होउ नाथ अध खगगन बधिका।।

यद्यपि प्रभु के अनेकों नाम हैं, और वेद कहते हैं कि वे एक से एक बढ़कर हैं, तो भी हे नाथ, राम नाम सब नामों से बढ़कर हो और पापरूपी पक्षियों के समूह के लिए यह बधिक के समान हो।

राका रजनी भगति तव राम नाम सोई सोम।।
अपर नाम उडगन बिमल बसहुँ भगत उर व्योम।।

आपकी भक्ति पूर्णिमा की रात्रि है, उसमें 'राम' नाम यही पूर्ण चन्द्रमा होकर और अन्य सब नाम तारागण होकर भक्तों के हृदय रूपी निर्मल आकाश में निवास करें। किष्किन्धा काण्ड में बाली ने अपनी मृत्यु के समय कहा कि मुनिगण जन्म–जन्म (प्रत्येक जन्म में अनेकों प्रकार का साधन करते रहते हैं, फिर भी अन्तकाल में उनसे 'राम' नहीं कहा जाता है (उनके मुख से राम नाम नहीं निकलता), जिनके नाम के बल से शंकर जी काशी में सबको समान रूप से मुक्ति देते हैं। मेरा वो सौभाग्य है कि मेरे अंत समय में प्रभु श्रीराम स्वयं मेरे सम्मुख खड़े हैं। इसी काण्ड के अंतिम सोरठे में तुलसीदास जी कहते हैं–

नीलोत्पल तन स्याम काम कोटि सौभा अधिक।
सुनिअ तासु गुन ग्राम जासु नाम अधरुग बधिक।।

जिनका नीले कमल के समान श्याम शरीर है, जिनकी शोभा करोड़ों काम देवों से भी अधिक है और जिनका नाम पापरूपी पक्षियों को मारने के लिए बधिक के समान है, उन श्रीराम के गुणों के समूह (लीला) को अवश्य सुनना चाहिए। सुन्दरकाण्ड में रावण को समझाते हुए विभीषण जी कहते हैं–हे नाथ! काम, क्रोध, मद और लोभ को छोड़कर श्रीराम

जी को भजिये, जिन्हें संत (सत्पुरूष) भजते हैं, जिनका नाम तीनों तापों का नाश करने वाला है। हे दशशीश मैं बार–बार आपके चरणों में विनती करता हूँ कि मान, मोह और मद को त्यागकर आप कोशलपति श्रीराम जी का भजन कीजिये। सुन्दर काण्ड के अंतिम दोहे में तुलसीदास जी कहते हैं–

सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान।
सादर सुनहिं ते तरहिं भक्त सिंधु बिना जलजान।।

श्री रघुनाथ जी का गुणगान सम्पूर्ण सुन्दर मंगलों का देने वाला है। जो इसे आदर सहित सुनेंगे, वे बिना किसी जहाज (आत्म साधन) के ही भवसागर को तर जायेंगे, अर्थात मुक्ति को प्राप्त हो जायेंगे। लंकाकाण्ड में सेतु बंध के समय श्री जाम्बवंतजी ने हाथ जोड़कर भगवान श्रीराम से कहा–हे सूर्यकुल के ध्वज–स्वरूप श्रीराम जी! सुनिये। हे नाथ! सब से बड़ा सेतु तो आपका नाम ही है, जिस पर चढ़कर मनुष्य संसार रूपी सागर से पार हो जाते हैं।

तुलसीदास जी कहते हैं–

श्री रघुबीर प्रताप ते सिंधु तरे पासान।
ते मतिमंद जे राम तजि भजहि जाइ प्रभु आन।।

श्री रघुवीर के प्रताप से पत्थर भी समुद्र पर तैर गये। ऐसे श्रीराम जी को छोड़कर जो किसी दूसरे स्वामी को भजते हैं, वे मंदबुद्धि हैं। श्रीरामचन्द जी के रूप एवं गुणों का स्मरण करके कुम्भकरण भी एक क्षण के लिए प्रेम में मग्न हो गए थे। राम–रावण युद्ध के समय रावण की पत्नी मंदोदरी रावण से कह रही है–हे प्राणनाथ ! मेरी विनती सुनिये। हे प्रियतम! श्रीराम से विरोध छोड़ दीजिये। उन्हें मनुष्य जानकर मन में हठ न पकड़े रहिये। श्रीरघुकुल शिरोमणी श्रीरामचन्द्र जी विश्व रूप हैं। उनकी शरण में जाइये।

अस बिचारि सुनु प्राणपति प्रभुसन बयरू बिहाई।
प्रीति करहु रघुबीर पद मम अहिवात न जाइ।

मंदोदरी रावण से कह रही है – हे प्राणपति! सुनिये प्रभु से बैर छोड़कर श्रीरघुवीर के चरणों में प्रेम कीजिये, जिससे मेरा सुहाग न जाए। उत्तरकाण्ड में भगवान राम स्वयं सनकादि ऋषियों से कहते हैंः–

संत संग अपवर्ग कर कामी भव कर पंथ।
कहहिं संत कबि कोबिद श्रुति पुरान सदग्रंथ।।

संत का संग मोक्ष का और कामी का संग जन्म–मृत्यु के बंधन में पड़ने का मार्ग है। संत, कवि और पंडित तथा वेद, पुराण आदि सभी ग्रंथ ऐसा ही कहते हैं।

पुरूष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोई।
सब भाव भज कपट तजि मोहि परम प्रिय सोई।।

वह पुरूष हो, नपुंसक हो, स्त्री हो अथवा चर–अचर कोई भी जीव हो, कपट छोड़कर जो श्री सर्वभाव से मुझे भजता है, वही मुझे परम प्रिय है। श्री काकभुसुंडीजी, पक्षिराज गरूड़जी से कह रहे हैं–

रामचंद्र के भजन बिनु जो चाह पद निर्बान।
ग्यानवंत अपि सो नर पसु बिनु पूंछ बिषान।।

जो मनुष्य श्री रामचन्द्र जी के भजन के बिना मोक्ष पद चाहता है, वह ज्ञानवान होने पर भी बिना पूंछ और सींग का पशु है। बिना विश्वास के भक्ति नहीं होती, भक्ति के बिना श्रीरामचन्द्र जी पिघलते नहीं हैं और श्रीराम जी की कृपा के बिना जीव स्वप्न में भी शांति नहीं पाता। अतः सब कुतर्कों और संदेहों को छोड़कर करूणा की खान सुन्दर और सुख देने वाले श्रीरघुवीर का भजन कीजिये। उत्तरकाण्ड में श्री तुलसीदास जी कहते हैंः–

एहिं कलिकाल न साधन दूजा। जोग जग्य जप तप ब्रत पूजा।।
रामहिं सुमिरिअ गाइअ रामहिं। संतत सुनिऊ राम गुन ग्रामहि।।

इस कलिकाल में योग, यज्ञ, जप, तप, व्रत और पूजन आदि कोई दूसरा साधन नहीं है। बस श्रीरामजी का ही स्मरण करना, श्रीरामजी का ही गुणगान और निरंतर श्रीरामजी के ही गुण समूहों को सुनना चाहिए। राम रक्षा स्त्रोतम् के श्लोक 12 में कहा गया–

राम, रामभद्र, रामचन्द्र – इन नामों का स्मरण करने से मनुष्य पापों से लिप्त नहीं होता तथा भोग और मोक्ष प्राप्त कर लेता है। भगवान राम का कथन है कि राम, दाशरथि, शूर, लक्ष्मणानुचर, बाली, काकुत्स्य, पुरूष, पूर्ण, कौसल्येय, रघुत्तम, वेदान्त वैद्य, यज्ञेश, पुराण पुरूषोत्तम, जानकीवल्लभ, श्रीमान् और अप्रेमयपराक्रम–उन नाम का नित्य प्रति श्रद्धापूर्वक जप करने से मेरा भक्त अश्वमेघ यज्ञ से भी अधिक फल प्राप्त करता है–इसमें कोई संदेह नहीं है।

अंत में तुलसीदास जी ने कहा है कि रघुवीर मेरे समान कोई दीन नहीं है और आपके समान कोई दीनों का हित करने वाला नहीं है। ऐसा विचार कर हे रघुवंश मणि! मेरे जन्म–मरण के भयानक दुःख का हरण कर लीजिये। कलियुग में केवल भगवान का नाम स्मरण करते रहने से ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। इससे अच्छा और सरल और कोई उपाय नहीं है। अतः हे मन! राम–राम स्मरण कर, राम–राम स्मरण कर।

shivomcommercial@gmail.com

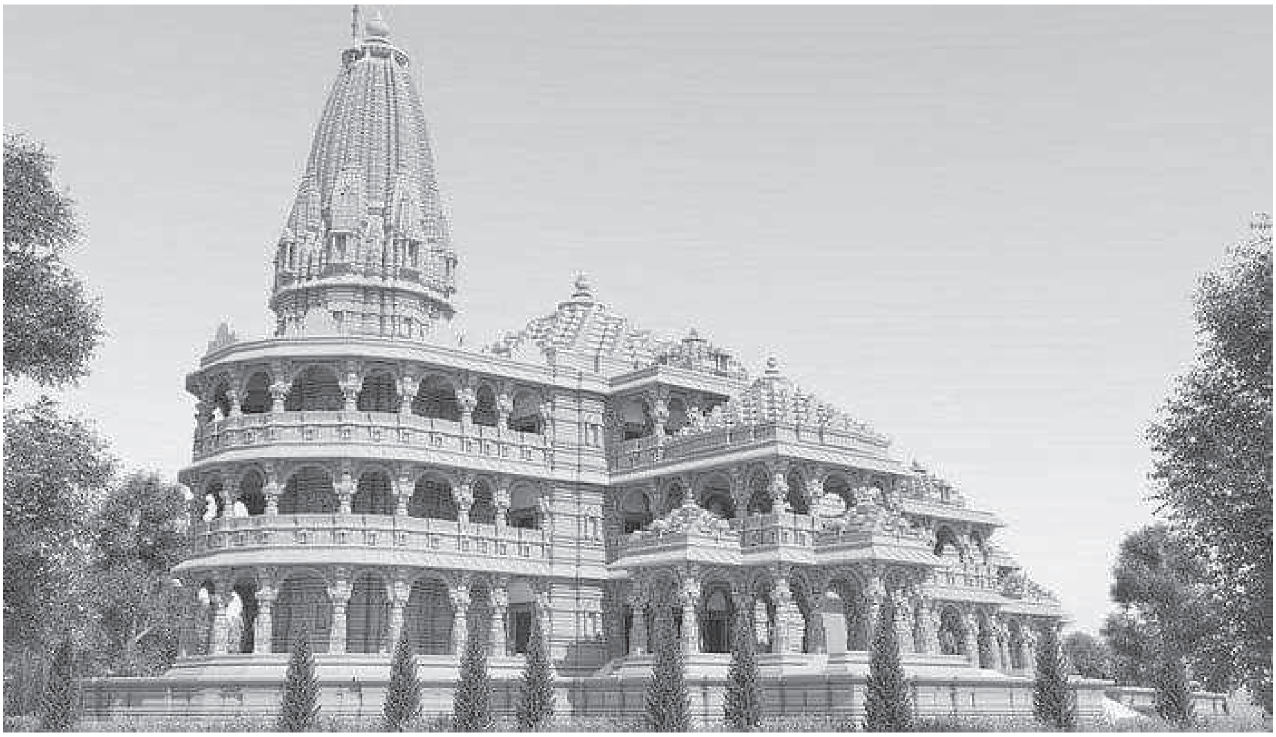

अयोध्या और हिंदुत्व
काँग्रेस हो गयी बेनकाब

मृत्युंजय दीक्षित

उत्तरप्रदेश में विधानसभा चुनाव जैसे–जैसे नजदीक आते जा रहे हैं, उसी प्रकार प्रदेश के सभी राजनैतिक दलों की तैयारियाँ और उनके मन के कोने में छिपी हुई घबराहट भी बाहर निकल कर आने लग गयी है। उप्र में प्रियंका गाँधी वार्ड्रा के नेतृत्व में काँग्रेस बहुत जोर–शोर से लगी हुई थी, लेकिन काँग्रेस नेता और उनके बड़े वकील सलमान खुर्शीद की अयोध्या पर आयी एक किताब और उसके बाद जिस प्रकार से बयानबाजियाँ हो रही हैं, उससे साफ पता चल रहा है कि अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण सेकुलर गैंग को रास नहीं आ रहा है।

प्रदेश में 18 प्रतिशत मुसलमानों का वोट पाने के लिए सभी दलों में दौड़ शुरू हो गयी है। सलमान खुर्शीद की किताब भी उसी रणनीति का एक अहम हिस्सा है, जिसमें काँग्रेस नेता ने हिंदुत्व की तुलना आईएसआईएस और बोको हरम जैसे कुख्यात आतंकी संगठनों से कर डाली है। यह संपूर्ण हिंदू समाज का घोर अपमान है। सलमान की पुस्तक से पता चल रहा है कि उन्होंने हिंदुत्व के खिलाफ जो कुछ लिखा है, वह कितना नफरत भरा है। उनकी बातों से यह भी साफ हो रहा है कि उन्होंने हिंदू समाज के अंतर्गत जिन सभी लोगों ने राम मंदिर निर्माण में सहयोग किया, काँग्रेस ने समस्त हिंदू समाज का अपमान कर दिया है, जिसमें दलित, पिछड़े, अति पिछड़े समाज के सभी लोगों का अपमान किया है। सलमान खुर्शीद को सबसे पहले सनातन हिंदू और हिंदुत्व का मतलब ही समझना होगा, क्योंकि दोनों एक ही हैं और काँग्रेस नेता ने सनातन हिंदू और हिंदुत्व में विभेद कर एक बहुत बड़ी गलती कर दी है। यह गलती काँग्रेस के लिए बिलकुल वैसी ही होने जा रही है, जब पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने कहा था कि इस देश की संपदा पर पहला हक मुसलमानों का है।

रही बात अयोध्या पर आये सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले पर तो, उन्हें यह बात समझने में दो साल लग गये कि अयोध्या पर सुप्रीम कोर्ट का बहुत अच्छा और ऐतिहासिक फैसला आया है। काँग्रेस की नींद अभी तक उड़ी हुई है कि उसे अभी भी उप्र में मुसलमानों का वोट नहीं मिलने जा रहा है और यही छटपटाहट व दर्द काँग्रेस नेताओं के सीने में छिपा हुई थी, जो अब निकलकर बाहर आ रही है। काँग्रेस व सेकुलर गैंग के लोग यही सोच रहे थे कि अयोध्या पर सुप्रीम फैसला अभी सौ साल तक लटका रहेगा और जो भी फैसला आयेगा, वह इस प्रकार से एकतरफा नहीं होगा। अब काँग्रेस व सेकुलर गैंग का यह सपना ध्वस्त हो चुका है और आज अयोध्या में भव्य गगनचुंबी मंदिर बन रहा है, वहीं योगी सरकार ने अयोध्या के विकास के लिए 2047 तक का विजन डाक्यूमेंट भी तैयार कर पेश कर दिया है, जिस पर काम भी चल रहा है।

वर्तमान समय में यदि काँग्रेस पार्टी अयोध्या में भव्य मंदिर निर्माण का समर्थन करती और अपनी गलतियों के लिये क्षमा माँगती, तो उसकी स्थिति संवर सकती थी, लेकिन सलमान खुर्शीद की किताब ने प्रियंका की चुनावी तैयारियों को ग्रहण लगा दिया है।

काँग्रेस संपूर्ण हिंदू समाज की घोर विरोधी बनकर उभर चुकी है और उसके नेता ने संपूर्ण हिंदू समाज को आतंकवादी कहकर अपमानित कर दिया है। काँग्रेस नेता का बयान करोड़ों हिंदुओं के मन को आहत कर रहा है। हिंदी, हिंदू, हिंदुत्व के खिलाफ यह काँग्रेस की बहुत बड़ी और गहरी साजिश है। इस किताब से काँग्रेस की विचारधारा पूरी तरह से बेनकाब हो चुकी है और यह साबित हो गया है कि यह विचारधारा के रूप में पूरी तरह से हिंदुओं के खिलाफ है। ये केवल हिंदुओं की भावनाओं की नहीं, इन बातों से भारत की आत्मा को भी गहरी ठेस पहुँचती हैं। यह बात बिलकुल सही हो रही है कि काँग्रेस एक मकड़ी की तरह हिंदुओं के खिलाफ नफरत का जाल बुन रही है। अभी जब 70 साल तक देश में काँग्रेस का राज रहा, तब यही हिंदू समाज बहुत अच्छा था और जब से मोदी सरकार दो बार पूर्ण बहुमत से बनी है, तब से संपूर्ण हिंदू समाज आतंकवादी हो गया, आखिर क्यों?

अब यह भी साफ हो गया कि जब तत्कालीन मुलायम सिंह यादव की सरकार ने अयोध्या में निरीह कारसेवकों पर गोलियाँ बरसायी थीं, उसका समर्थन भी काँग्रेस कर रही थीं और जब कश्मीर घाटी में हिंदू मारकर भगाया जा रहा था, उसमें काँग्रेस को बहुत आनंद आ रहा था, तभी काँग्रेस के एक नेता ने बयान दिया था कि "हुआ तो हुआ।" अब यही काँग्रेस पूरी तरह से बेनकाब हो रही है।

सलमान की पुस्तक से यह बात भी समझ में आ रही है कि अयोध्या विवाद पर सुप्रीम कोर्ट के लिये जिस अच्छे निर्णय को समझने में और किताब लिखने में दो साल लग गये, वो किताब ऐन चुनाव के समय पर ही क्यों आई है? सलमान की किताब से कई बातें साफ हो रही हैं कि कोर्ट में काँग्रेस और मुस्लिम समाज के वकीलों के पास कोई तर्क और बेहद मजबूत सबूत नहीं थे, वे लोग एक हारी हुई लड़ाई लड़ रहे थे, लेकिन वास्तव में काँग्रेस को अब तक की गयी अपनी गलतियों के लिए भारत की आम जनता से माफी माँगनी चाहिए थी, किन्तु उसने ऐसा नहीं किया और हिंदुत्व की तुलना आईएसआईएस से कर डाली। यह बेहद शर्मनाक कृत्य है। यह सुप्रीम कोर्ट के हिंदुत्व पर दिये गये कई फैसलों का उल्लंघन भी है।

सलमान की किताब से यह भी पता चल रहा है कि अयोध्या पर सुप्रीम फैसले के बाद भी काँग्रेस असमंजस में है। आज जो काँग्रेस हिंदुत्व की तुलना आतंकवाद से कर रही है, इसी काँग्रेस ने अदालत के अंदर और बाहर कई बार भगवान राम के अस्तित्व पर सवाल उठाये थे। काँग्रेस के वकील ने ही 2019 लोकसभा चुनाव के पहले कोर्ट में कहा था कि अभी अयोध्या विवाद पर बहस को टाल दिया जाये, क्योंकि इसका लाभ आगामी चुनावों में भाजपा को हो जायेगा।

दूसरी बड़ी बात यह है कि सलमान की किताब से यह भी पता चल रहा है कि अयोध्या पर सुप्रीम फैसले के बाद भी काँग्रेस असमंजस में है। आज जो काँग्रेस हिंदुत्व की तुलना आतंकवाद से कर रही है, इसी काँग्रेस ने अदालत के अंदर और बाहर कई बार भगवान राम के अस्तित्व पर सवाल उठाये थे। काँग्रेस के वकील ने ही 2019 लोकसभा चुनाव के पहले कोर्ट में कहा था कि अभी अयोध्या विवाद पर बहस को टाल दिया जाये, क्योंकि इसका लाभ आगामी चुनावों में भाजपा को हो जायेगा।

काँग्रेस मुस्लिम तुष्टिकरण के नाम पर हिंदू धर्म व समाज तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर लगातार हमले करती रही है और बयान देती रही है, जिसका परिणाम आज देश के समाने है। काँग्रेस नेता दिग्विजय सिंह, 26/11 हमले के समय तत्कालीन गृहमंत्री सुशील कुमार शिंदे और पी चिदम्बरम ने हिंदू आतंकवाद का मुद्दा उछाला था। उस समय एक प्रकार से मुंबई हमलों के पीछे हिंदू संगठनों को ही फंसाने की गहरी साजिशें रची जा रही थीं। राहुल गाँधी ने एक बार बयान दिया था कि लोग लड़कियाँ छेड़ने के लिए मंदिर जाते हैं। इस बयान के बाद काँग्रेस की बहुत अधिक फजीहत हुई थी और आज तक काँग्रेस खड़ी नहीं हो पा रही है।

2007 में काँग्रेस सरकार ने हलफनामा देकर कहा था कि चूंकि राम, सीता, हनुमान और वाल्मीकि

वगैरह काल्पनिक पात्र हैं, इसलिए रामसेतु का कोई धार्मिक महत्व नहीं माना जा सकता। काँग्रेस गुजरात में सोमनाथ मंदिर भी नहीं बनवा रही थी और रोड़े अटकाने का असफल प्रयास कर रही थी। इसी प्रकार मध्यप्रदेश में कमलनाथ ने कहा था कि 90 प्रतिशत मुसलमान ने मतदान नहीं किया, तो काँग्रेस का जीतना मुश्किल हो जायेगा।

सलमान खुर्शीद की पुस्तक के आधार पर टी.वी. चैनलों पर खूब बहसें हो रही हैं और सोशल मीडिया पर भी बहुत तेज युद्ध छिड़ गया है। जिनका सार यही है कि सभी काँग्रेसी व सेकुलर गैंग के लोग सलमान खुर्शीद के विचारों के साथ खड़े हो गये हैं। किताब के बहाने हिंदू समाज व सनातन सँस्थाओं पर बे–सिर–पैर का झूठा हमला बोला जा रहा है।

आजकल अयोध्या से लेकर चित्रकूट तक भव्य दीपोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। यह काम सेकुलर गैंग को पसंद नहीं आ रहा है। आज जो नकली रामभक्त बनकर अयोध्या जा रहे हैं, वे सभी दोहरे चरित्र के लोग हैं और सभी का चाल, चेहरा और चरित्र लगातार बेनकाब हो रहा है। यह सभी दल असल में अयोध्या में भव्य मंदिर निर्माण के लिए जो धन लोगों ने दान में दिया है, उसे हड़पने की कोशिश में लगे हैं। सलमान खुर्शीद बहुत ही दुखी मन से सुप्रीम कोर्ट के फैसले को अच्छा मान रहे हैं। यह वही काँग्रेस है, जिसने अयोध्या के भव्य भूमि पूजन समारोह में भी कोर्ट के माध्यम से कोरोना आदि का बहाना बनाकर बाधा डालने का असफल प्रयास किया था। काँग्रेसी शंकराचार्य स्वरूपानंद सरस्वती ने बयान दिया था कि भूमि पूजन का समय गलत चुना गया है और इसे टाला जाना चाहिये। काँग्रेस व सेकुलर गैंग हर क्षण इसी प्रयास में लगा रहता है कि मंदिर निर्माण को कैसे रोका जाये। जब काँग्रेस व सेकुलर गैंग की सभी साजिशें ध्वस्त हो गयीं और काँग्रेस को यह समझ में आ गया कि अब वह अपने मुस्लिम मतदाता को खुश करने के लिए कुछ नहीं कर सकती, तब उसने सलमान खुर्शीद से ऐसी किताब लिखवा डाली है कि वह पूरी तहर से बेनकाब हो चुकी है।

अयोध्या विवाद और अब राम मंदिर पर काँग्रेस व सेकुलर गैंग चारों खाने चित्त हो चुका है, उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा है। अतः अब उसने समस्त हिंदू समाज और हिंदुत्व को ही आतंकवादी कहना शुरू कर दिया है। यह लोकतंत्र का भी घोर अपमान है। अयोध्या विवाद के नाम पर सेकुलर गैंग अपनी दुकान चला रहा था, जो अब बंद हो चुकी है। अगर काँग्रेस व सेकुलर गैंग के नेता इसी प्रकार हिंदी, हिंदू और हिंदुत्व पर हमला करते रहे, तो एक बार फिर हिंदू समाज उठ खड़ा होगा।

सलमान खुर्शीद की किताब के आधार समस्त हिंदू जनमानस को एक बार फिर जागना होगा और यदि ऐसा हो गया, तो काँग्रेस मुक्त भारत होकर रहेगा। काँग्रेस नेता ने हिंदुत्व की तुलना आईएसआईएस से करके एक बहुत ही गंदा खेल खेलने का असफल प्रयास किया है। काँग्रेस हिंदू समाज से नफरत करती है, तभी तो, उसके 70 साल के शासन के कारण ही पड़ोसी पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बाँग्लादेश में हिंदू समाप्त कर दिये गये। काँग्रेस के ही कारण देश के अंदर जम्मू–कश्मीर सहित कई प्रांतों में हिंदू अल्पसँख्यक हो गये।

यह काँग्रेस घोर हिंदू विरोधी है। अभी त्रिपुरा की फर्जी घटनाओं को लेकर राहुल गाँधी ने वहाँ के हिंदू समाज के खिलाफ मानसिक विकृतियों से भरा एक ट्विट किया था। राहुल गाँधी कहते हैं कि हमारी सरकार आयी तो तीन तलाक कानून समाप्त होगा, उप्पा कानून समाप्त होगा। आज काँग्रेस ने जो हिंदू विरोधी रवैया अपनाया है उसके पीछे श्रीमती सोनिया गाँधी और राहुल गाँधी ही हैं। यह सभी लोग तथाकथित इच्छाधारी हिंदू हैं, जो बेनकाब हो रहे हैं। अतः हिंदू समाज को जागृत होकर मतदान करना होगा और काँग्रेस व सेकुलर गैंग को सही जवाब देना होगा। सलमान खुर्शीद की किताब आने के बाद काँग्रेस ने अपने लिए चुनावों में गहरा गडढा खोद लिया है।

ymritvsk1973@gmail.com

सामाजिक समरसता का प्रषिक्षण वर्ग

कानपुर। दिनांक 13, 14 नवंबर, 2021 को कानपुर प्रान्त के कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण वर्ग इटावा में आयोजित हुआ। 14 नवम्बर को इटावा शहर के समविचारी विविध सेत्र के कार्यकर्ताओं के सम्मुख समरसता का विषय रखा गया, जिसमें कानपुर शहर के प्रमुख लोग भी उपस्थित रहे। इटावा और कानपुर में समरसता विषयक प्रेसवार्ता भी हुई। 2 दिवसीय समरसता प्रशिक्षण वर्ग में प्रान्त संगठन मंत्री श्री मधुरम जी, प्रान्त सह मंत्री श्री अनिल जी, प्रान्त समरस्ता प्रमुख श्री विनय वर्मा जी इत्यादि का सहयोग व सानिध्य प्राप्त हुआ।

इमरान का मंत्री या मसखरा!

के. विक्रम राव

पाकिस्तान की पीड़ा डबल हो गयी है। उसे दुबई में सेमिफाइनल हराने वाला आस्ट्रेलिया अब टी–20 क्रिकेट का विश्वकप विजेता हो गया है। मगर प्रश्न है कि क्या इससे ईसाइयत की इस्लाम पर फतह हुयी है? क्योंकि जब पाकिस्तान ने भारत को उसी दुबई स्टेडियम में (24 अक्टूबर 2021) शिकस्त दी थी, तो पाकिस्तान के गृहमंत्री मियां शेख राशिद उर्फ शीदा टल्ली ने ऐलान किया था कि ''भारत की पराजय, इस्लाम की फतह है। आलमी इस्लाम को पाकिस्तान का यह तोहफा है।'' तो इसके पूर्व विश्वकप मुकाबलों में जो 12 मैच पाकिस्तान हारा था, वह इस्लाम की हार थी? अर्थात भारत की आबादी के शेष तीस करोड़ मुसलमान इस मंत्री की नजर में इस्लामी नहीं हैं। मगर किसी भी भारतीय मुसलमान ने आज तक इन बीते तीन सप्ताह में कोई विरोध व्यक्त नहीं किया। पाकिस्तान की विजय के उल्लास में? अथवा सौ करोड़ गैर मुस्लिम हिन्दुस्तानियों से उन्हें कोई सरोकार नहीं है? तो क्या वे सब काफिर हो गये? सच या झूठ, जैसा भी हो, भारतीय मुसलमान ने इसे नागवार या भद्दा नहीं कहा। कारण पुराना होगा। खैर पाकिस्तानी गृहमंत्री की भारतीय मीडिया में एक जोकर वाली छवि है। खासकर मशहूर पाकिस्तानी पत्रकार नायला इनायत ने इस शेख की हल्की टिप्पणियों पर, फुलझड़ियों पर, जो व्यंग करती हैं, वे सब तीखे, चुटीले और रसीले होते हैं। मसलन सत्तर वर्षीय शेख राशिद अभी तक एक अकेले ही हैं। उनसे पूछा ''कोई मिली नहीं?'' तो उनका उत्तर था, ''मेरा दिल कोई सुपर बाजार नहीं है।'' फिर उनसे पूछा गया, क्यों नहीं जोड़ा बन पाया? तो बोले, ''जब दूध बाजार में मिलता है, तो भैंस क्यों पालें?'' शेख राशिद पर तरस भी आई। उन्हें देखकर पेरिस के एक पत्रकार अधिवेशन में फ्रांस के एक काबीना मंत्री से मेरी भेंट हुयी थी। काफी तेज तर्रार थे। अचानक मैं पूछ बैठा ''अब तक अविवाहित रहने का कारण?'' जवाब मिला, ''मैं आदर्श पत्नी की खोज में था। मगर जब एक अधेड़ मिली, तो वह ''आदर्श साथी की खोज में थी, अधेड़ हो गयी। अब तक दोनों अधूरे ही रह गये।'' अटल बिहारी वाजपेयी की बात याद आयी। हमारी साथी महिला पत्रकार ने सवाल किया, ''अभी तक कुँआरे क्यों हैं? अटल जी का सवाल पर सवाल था, ''आपका का प्रश्न है या प्रस्ताव?''

शेख मियां बड़े हंसोड़ हैं, मजाकिया भी। अपने वजीरे आजम को ''मामूली कप्तान'' कहते हैं। आवामी लीग के ये नेता सतारुढ़ दल तहरीके इंसाफ को ''तांगा पार्टी'' कहते हैं। पत्रकार नायला बताती हैं कि राशिद किसी आला हुक्काम से मिलने गये। वह नहीं मिला था। चपरासी मात्र मिला था, लेकिन दावा कर दिया कि, ''अफसर मिला था।'' राशिद मियां पाकिस्तान के फौजी कमांडर जनरल कमर जावेद बाजवा की बात दोहराते हैं कि, ''पाकिस्तान ने अणु बम भारत के लिये बनाया है, शबे बरात में फोड़ने हेतु नहीं।'' अणु बम के बारे में राशिद कहते हैं कि, ''हमारे पास आधा पाव और पूरा पाव के भी बम हैं।'' याद दिला दूँ कि राशिद मियां 1998 के

जब पाकिस्तान ने भारत को उसी दुबई स्टेडियम में (24 अक्टूबर 2021) शिकस्त दी थी, तो पाकिस्तान के गृहमंत्री मियां शेख राशिद उर्फ शीदा टल्ली ने ऐलान किया था कि "भारत की पराजय, इस्लाम की फतह है। आलमी इस्लाम को पाकिस्तान का यह तोहफा है।" तो इसके पूर्व विश्वकप मुकाबलों में जो 12 मैच पाकिस्तान हारा था, वह इस्लाम की हार थी? अर्थात भारत की आबादी के शेष तीस करोड़ मुसलमान इस मंत्री की नजर में इस्लामी नहीं हैं।

अणु बम परीक्षण पर पाकिस्तान से बाहर भाग गये थे। मगर उनका दावा है कि वे पंजाब सीमा पर जंग करेंगे। अब उन्हें याद दिलाना होगा कि भारत ने उनके देश को तीन बार पराजित किया है।

नायला मानती हैं कि पाकिस्तान–भारत से सामना नहीं कर सकता, क्योंकि विश्व में हर मुल्क से उसने उधार ले रखा है। विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी को वे ''पाकिस्तान में भारतीय राजदूत मानती हैं।'' भारतीय पत्रकारों की फिल्मी छवि पर नायला कहतीं हैं कि, ''सात दशक पूर्व ये रिपोर्टर वीर पुरुष थे। आज परदे पर मसखरे बन गये हैं।'' राशिद मियां बेनजीर भुट्टो को ''टैक्सी'' कहते थे। हर कोई सवारी कर सकता है। वे रेल मंत्री भी रहे। एक दफा बोले, ''एक्सप्रेस ट्रेन मुसाफिर को तौल तो नहीं सकती।'' रेल मंत्री बोले, ''करीब 24 करोड़ पाकिस्तानियों ने ईद के अवसर पर रेल के ई–टिकट खरीदे।'' जबकि पाकिस्तान की आबादी 22 करोड़ है। राशिद अंशकालिक विदेश मंत्री हैं। उनका पूर्वकालिक कार्य ईशनिंदा के दोषियों को पकड़ना और मार डालना है। उससे फुर्सत मिली तो सरकारी ड्यूटी बजाते हैं।

एकदा सार्वजनिक सभा में उनके माइक पर करंट आ गया। झटका लगा। राशिद बोले, ''नरेन्द्र मोदी मेरे जलसे को नाकाम करना चाहते हैं।'' आवामी मुस्लिम लीग के यह मूढ मंत्री राशिद बोले, ''मैं बीस करोड़ भारतीय मुसलमानों की दिली आवाज हूँ।''

अब मूल और गंभीर मुद्दे पर आयें। राशिद भले ही मजाकिया हों। पर भारत की हार, इस्लाम की जीत वाले उनके बयान पर भारत की इस्लामी तंजीमें, साजिशभरी खामोशी क्यों बनाये रहीं? इस्लामी जम्हुरियाये पाकिस्तान के वजीरे दाखिला शेख अब्दुल राशिद की भांति अमित शाह ने ऐसा कुछ कहा होता तो? इस्लामाबाद में भारतीय उच्चायोग का कार्यालय जल चुका होता। दिल्ली में भारतीय मुसलमानों ने पाकिस्तान दूतावास के सामने छोटा भी प्रदर्शन तक नहीं किया? मियां सलमान खुर्शीद हिन्दुत्व को हिन्दू से अलग कर रहे हैं। पर भारत की क्रिकेट में हार को इस्लाम की जीत पर ऐतराज नहीं करते? अपने मन में खुर्शीद मियां भी गुलाम नबी आजाद की भांति स्वीकारते होंगे कि विश्वभर में मुसलमान केवल भारत में सुरक्षित हैं। हर इस्लामी मुल्क में मुसलमान दूसरे मुसलमान को मार काट रहा है। पश्चिम एशिया से उत्तर अफ्रीका में 30 इस्लामिक राष्ट्रों में रहने वाले 130 करोड़ मुसलमान आपस में खून खराबा मचाए हैं।

भारतीय मुसलमानों का अब भारत को दारुल हर्ब मानना बंद करना चाहिये। खोरासान (अफगानिस्तान) से गजवा–ए हिन्द (भारत का इस्लामीककरण) का सपना छोड़ना चाहिये। शेख राशिद सरीखे जोकर भारतीय मुसलमानों के प्रेरक कदापि नहीं हो सकते हैं।

k.vikramrao@gmail.com

सुभाषित

जिता सभा वस्त्रवता मिष्टाशा गोमता जिता।
अध्वा जितो यानवता सर्वं शीलवता जितम्।।

अच्छे वस्त्रवाला सभा को जीतता (अपना प्रभाव जमा लेता) है, जिसके पास गौ है, वह (दूध, घी, मक्खन, खोवा आदि पदार्थों के आस्वादन से) मीठे स्वाद की आकांक्षा को जीत लेता है, सवारी से चलने वाला मार्ग को जीत लेता (तय कर लेता) है और शील स्वभाव वाला पुरुष सब पर विजय पा लेता है।

हिन्दुओं व हिन्दुत्व की रक्षा हेतु कार्य कर रहा है संगठन : मुकेश खाण्डेकर

जम्मू, 14 नवम्बर। विश्व हिन्दू परिषद् के उत्तर क्षेत्र संगठन मंत्री श्री मुकेश खांडेकर जी कि उपस्थिति में जोरावर सिंह नगर की टोली की घोषणा हुई। विश्व हिन्दू परिषद् की ओर से संगठन को मजबूत करने के लिए कईं समाजिक एवं धार्मिक कार्य किये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान एवं भविष्य में हिन्दू समाज को धर्मान्तरित करवाने हेतु इसाई मिशनरी एवं मुस्लिमों द्वारा पुरजोर कोशिश की जा रही है। गौधन की तस्करी, लव जिहाद एवं अन्य अनेक घृणित कार्य किये जा रहे हैं, जिससे हिन्दू समाज को भारी चुनौतियों का समाना करना पड़ रहा है।

विश्व हिन्दू परिषद् की स्थापना ही धर्मांतरण, लव जिहाद को रोकने हेतु ही परम पूज्य गुरूजी द्वारा की गयी थी। वर्तमान में विश्व हिन्दू परिषद् का कईं देशों में कार्य चल रहा है। हिन्दू, हिन्दुत्व एवं हिन्दुओं और संगठन की मजबूती हेतु खण्ड–प्रखण्ड स्तर से प्रान्त स्तर तक विश्व हिन्दू परिषद् की समितियाँ बनें और ज्यादा से ज्यादा हिन्दू समाज संगठन से जुड़े, यही विश्व हिन्दू परिषद् का उद्देश्य है। इस अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद् के कार्यकारी अध्यक्ष राजेश गुप्ता, प्रान्त संगठन मंत्री विवेकानंद जी आदि उपस्थित रहे।

बुंदेलखण्ड की अयोध्या 'ओरछा'

डॉ. विभा खरे

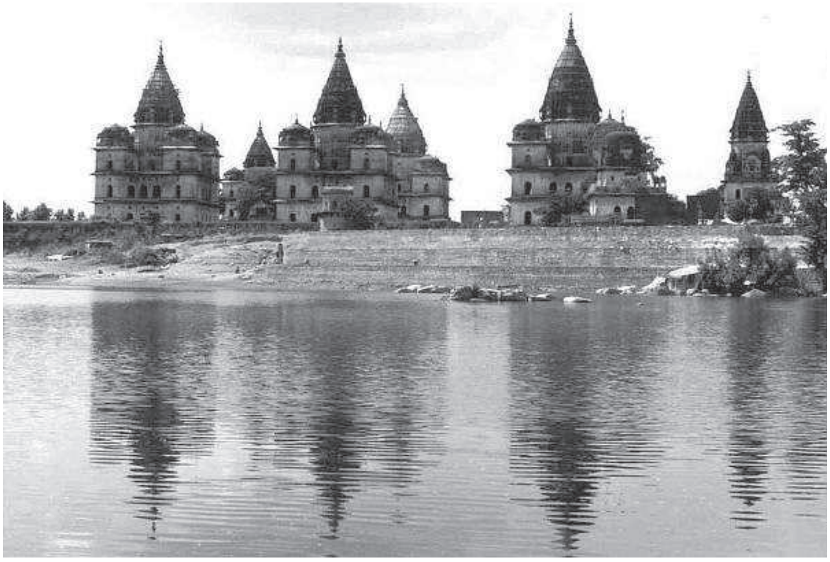

बुन्देलखण्ड की धरती पर सुरम्य प्रकृति की गोद में बसे ओरछा की मनोहारी छवि देश–विदेश के पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती रहती है। स्थापत्य कला एवं वास्तुकला की दृष्टि से ओरछा को बुन्देलखण्ड का सबसे बड़ा कला सम्पन्न धार्मिक स्थल माना गया है। ओरछा के मंदिर हिन्दू स्थापत्य कला की श्रेष्ठतम् कृतियाँ हैं। देश–विदेश से हजारों की सँख्या में पर्यटक आकर, इस धार्मिक स्थली की छवि को अपनी आँखों में बसा ले जाते हैं, जो हमेशा उनके मन–मस्तिष्क पर अपना प्रभाव बनाए रखती है।

ओरछा के सौन्दर्य की अनुपम छटा पर्यटकों को करती है आकर्षित – ओरछा की पावन एवं महिमामयी भूमि पर आकर प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य की छटा का अवलोकन कर, जो शीतलता एवं शांति पर्यटकों को प्राप्त होती है, वह उन्हें बिजली से जगमगाती वातानुकूलित अट्टालिकाओं में नहीं मिल सकती। ओरछा के आकर्षक सघन वनों के मध्य बुन्देलखण्ड की गंगा, प्राचीन सलिता, बेत्रवती के शांत प्रवाह को देख यात्री पर बेतवा में जामनी एवं घरारी नदियां आकर मिली हैं, वहाँ प्रयाग के त्रिवेणी का संगम सा दृश्य बन जाता है। यहीं से बेतवा विशाल रुप धारण कर लेती है।

विशेष अवसरों पर विशाल मेलों का आयोजन – यहाँ पर प्रतिवर्ष रामनवमी, सावनतीज तथा मकर संक्रान्ति के अवसरों पर विशाल मेलों में तो धर्मप्राण जनसमूह इस स्थान पर उमड़ सा पड़ता है। वह इस पावन तीर्थ के दर्शन पाकर स्वयं को धन्य मानता है। प्रतिवर्ष अषाढ़ शुक्ल दो से अषाढ़ शुक्ल चार तक रथ यात्रा का भव्य जुलूस निकाला जाता है, जिसमें हजारों की सँख्या में श्रद्धालु भाग लेते हैं। विशाल सिंहासन पर भगवान श्री राम की मनोहारी रथ यात्रा झाँकी की छवि देखते ही बनती है।

ऐतिहासिक स्थलों की है अद्‌भुत गरिमा – ओरछा की ऐतिहासिक और धार्मिक महिमामण्डित भूमि अपनी छाती में कितने रहस्य छिपाए हुए है, कोई नहीं कह सकता। यहाँ के मंदिरों की अनूठी आभा है। ऐतिहासिक स्थलों की अद्‌भुत गरिमा है। गहन वनों से आच्छादित यह क्षेत्र तपस्वियों एवं साधुओं की साधना स्थली रहा है। यहाँ के रण बाँकुरे बुन्देला राजाओं की वीरगाथा यहाँ के प्राचीन महल मूक भाषा में सुनाते हैं।

मंदिरों की है अनूठी आभा – ओरछा में कई मंदिर है। जो तत्कालीन स्थापत्य कला एवं नैपुण्य के प्रतीक हैं। ओरछा के राम राजा मंदिर का निर्माण महाराजा भारती चंद्र ने करवाया था। वस्तुतः यह पूर्व में एक महल था, किंतु आज इसमें भगवान श्री रामराजा विराजमान हैं। प्राचीन भारत की आकर्षक वास्तुकला को समेटे हुए यह मंदिर अपनी अलग महिमामय एवं धार्मिक कहानी सुना रहा है। धर्म भीरुओं के हृदय में इस मंदिर के प्रति असीम श्रद्धा है और वे रामराजा के चरणों में नतमस्तक होकर अपने जीवन को सार्थक मान लेते हैं।

ओरछा की महारानी गणेश कुँवरि थीं रामभक्त – मंदिर के प्रति धर्मप्राण जनता के इतने अधिक श्रद्धाभाव के पार्श्व में एक बड़ी रोचक जनश्रुति है। ओरछा नरेश मधुकर शाह कृष्ण के उपासक थे। जबकि उनकी महारानी गणेश कुँवरि रामभक्त थीं। एक बार दोनों में धार्मिक विवाद छिड़ गया। अंत में यह निर्णय हुआ कि जो भी अपने इष्ट देव को संसार के समक्ष साक्षात रूप में प्रकट कर दे, वही अपनी उपासना में विजयी समझा जायेगा। मधुकर शाह कृष्ण की पावन भूमि वृंदावन को प्रस्थान कर गए और महारानी गणेश कुँवरि भगवान की उपासना कर उन्हें अपने साथ लाने का उद्देश्य लेकर अवधपुरी चलीं गयीं। महारानी को काशी विश्वनाथ का वरदान प्राप्त था। अतः उनकी विजय हुई। एक माह की कठिन तपस्या के उपरांत भगवान राम ने उन्हें साक्षात दर्शन दिए। रानी गणेश कुँवरि भगवान राम की प्रतिमायुक्त स्वर्णजड़ित सिंहासन लेकर साधुओं के समूह सहित पैदल ही ओरछा के लिए चल पड़ीं। इधर मधुकर शाह को श्री रामराजा ने स्वप्न दिया कि मैं ओरछा आ रहा हूँ, अतः मेरे लिए मंदिर का निर्माण कराया जाए। मधुकर शाह ने चतुर्भुज मंदिर का निर्माण शुरु करा दिया।

ओरछा नरेश मधुकर शाह ने कराया मंदिर का निर्माण – अभी

मन्दिर का निर्माण कार्य चल ही रहा था कि महारानी ओरछा पहुँच गयीं। और उन्होंने भगवान को महल में ही आसीन करा दिया। हर्षातिरेक में उन्हें भगवान की कही यह बात विस्मृत हो गयीं थी कि जिस भवन में एक बार बैठ जाउँगा, वहाँ से हटूँगा नहीं। मंदिर के निर्माण के बाद लाख प्रयत्न करने के बाद भी भगवान राम राजा को उस महल से हटाया नहीं जा सका। और उसी महल को ही मंदिर के नाम से विख्यात कर दिया गया। तदुपरांत नवनिर्मित मंदिर में भगवान चर्तुभुज जी की मूर्ति आसीन करायी गयी। आज भी रामराजा के मंदिर को देखने से सहज आभास हो उठता है कि यह मंदिर न होकर कोई महल रहा होगा।

स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना चर्तुभुज मंदिर – ओरछा में स्थित चर्तुभुज मंदिर का निर्माण ओरछा के तत्कालीन शासक मधुकर शाह ने 1503 ईसवी में कराया था। इसका निर्माण भूरे पत्थरों से कराया गया है, चूना आदि का प्रयोग बहुत कम हुआ है। यह मंदिर तत्कालीन हिन्दू स्थापत्य कला एवं उन दिनों के निर्माताओं की अद्भुत प्रतिभा तथा अभिरुचि का प्रमाण है। इस मंदिर के मुख्य द्वार पर पहुँचने के लिए पत्थर की अनगिनत सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। मंदिर के प्रांगण में गणपति, हनुमान तथा जगदम्बा आदि देवी–देवताओं की प्रतिमाएँ भी हैं। मंदिर के अर्न्तभाग में दीवारों पर फूलदार नक्काशी व चित्रकारी आदि के दृश्य हैं। सन् 1606 में महाराज अमरेश पन्ना ने सवा मन का स्वर्णपत्र युक्त कलश भी इस मंदिर पर चढ़वाया था, जो सन् 1970 में बड़ी सफाई से चोरी कर लिया गया। काफी प्रयास के बावजूद भी आज तक इस कलश का कोई सुराग नहीं मिल सका है। इस मंदिर की निर्माण शैली एवं शिल्पकला देखकर दर्शक मंत्रमुग्ध रह जाते हैं।

पेंटिंग के लिए यह समूचे विश्व में विख्यात'लक्ष्मी मंदिर' – ओरछा में स्थित 'लक्ष्मी मंदिर' 1618 ईसवी में महाराज वीरसिंह द्वारा निर्मित शिल्पियों की कलात्मक समग्रता को मुखरित करता हुआ यह मंदिर भारत के उन गिने चुने मंदिरों में है, जिन पर देश के पुरातत्व विभाग को बड़ा गर्व रहा है। यह मंदिर अपनी भव्य स्थापत्य कला एवं लावण्यमय दीवारों की उत्कीर्ण कला का तो अद्भुत प्रतीक है ही, किंतु अपनी पेंटिंग के लिए यह समूचे विश्व में विख्यात है। मंदिर की अर्न्तदीवारों पर रामलीला तथा कृष्ण लीला की विभिन्न घटनाएँ चित्रित हैं।

ओरछा में कई उल्लेखनीय दर्शनीय स्थल – इन मंदिरों के अतिरिक्त ओरछा में कई उल्लेखनीय दर्शनीय स्थल हैं। जैसे–जहाँगीर महल, राजमहल, शीशमहल, दरबारी नृत्यांगना प्रवीनराय का भव्य निवास भवन, आनंद मण्डल, मालाबाग, फूलबाग, महर्षि तुंग का आश्रम एवं राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी तथा लोकनायक जयप्रकाश नारायण की भस्म व अस्थियों का विसर्जन स्थल, कंचनाघाट, सावन–भादों आदि दर्शनीय हैं।

झाँसी से ''ओरछा'' प्रथम रेलवे स्टेशन – उत्तरप्रदेश के ऐतिहासिक नगर झाँसी के करीब 20 कि.मी. की दूरी पर अवस्थित ओरछा के लिए प्रचुर मात्रा में टैक्सियाँ व बसें उपलब्ध रहती हैं। रेल मार्ग से यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए झाँसी–मानिकपुर ब्रांच लाइन पर झाँसी से ''ओरछा'' प्रथम स्टेशन है। ओरछा में यात्रियों के ठहरने के लिए उ.प्र. पर्यटन विभाग द्वारा होटल तथा अन्य कई लॉज व धर्मशालाएँ उपलब्ध हैं।

vibhakhare12345@gmail.com

विश्व हिंदू परिषद गौरक्षा विभाग ने मनाई गोपाष्टमी

गौसेवा आश्रम पठार पर गौपाष्टमी मनाई गई, जिसमें लोकप्रिय विधायक श्री जजपाल सिंह जी जज्जी, विहिप प्रांत धर्म प्रसार प्रमुख डॉ. दीपक जी मिश्रा, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य (भाजपा) श्री नारायण प्रसाद जी शर्मा, सरस्वती शिशु मंदिर के प्राचार्य श्री पाठक जी, विभाग गौरक्षा प्रमुख श्री चन्द्रमोहन जी शर्मा, सर्व ब्राम्हण महापंचायत के कोषाध्यक्ष श्री राजेश जी शर्मा, विहिप कोषाध्यक्ष श्री रामकुमार जी चौधरी, गौसेवक व विहीप, बजरंग दल के कार्यकर्ता उपस्थित रहे। इस अवसर पर कार्यक्रम में वक्ताओं द्वारा गोपालन के महत्व व उपयोगिता के साथ वर्तमान में गौ माता की स्थिति व समाधान पर अपने विचार व्यक्त किए गए।

कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीराम दरबार व गौमाता का पूजन के साथ करते हुए, गौमाता को हरी घास व गुड़ खिलाई गई। कार्यक्रम का संचालन जिला सहमंत्री संतोष शर्मा द्वारा किया गया।

deepakmishravhp@gmail.com

स्व. आनंद शंकर जी की संक्षिप्त जानकारी

स्वर्गीय आनंदशंकर जी

हिन्दू जागरण के कर्मयोगी

अपने जीवन के 99 वर्ष पूरे करते हुए दिनांक 10 नवंबर के दिन, हिन्दू जागरण के कर्मयोगी, वयोवृद्ध, तपोवृद्ध ऐसे श्री आनंद शंकर जी पंड्या ने अंतिम सांस ली और वे निजधाम को चले गए।

अपना सफल रत्न व्यवसाय युवा पिढी को सौंपकर, उन्होंने अपने आपको हिन्दू जागरण के कार्य में झोंक दिया। निडर होकर वे बोलते गये, लिखते गये और हर मंचपर आग्रह से अपने विचार प्रस्तुत करते गये. पिछले 50 वर्षों से अपने चिंतन और चेतावनीपूर्ण पत्रकों के माध्यम से हिन्दू समाज को जगाने का महान कार्य अकेले करते रहे।

उनके पत्रक करोडों की सँख्या में छपवाकर देश के हर कोने में बाँटने का काम मेरे जैसे कुछ लोगों ने उत्साह से किया। इस कार्य के लिए अपने व्यवसायी मित्रों से और समाज के जागृत नागरिकों से सहयोग लेते हुए वे अपना स्वयं का भी बड़ा आर्थिक योगदान देते रहे।

निष्काम और निस्वार्थ भाव से उन्होंने अपना जीवन इस महान कार्य में समर्पित किया। उनका जीवन एक ऐसा दीपस्तंभ है, जिसके प्रकाश में हम सब आगे बढ सकते हैं.। आनंद शंकर जी हिन्दू जीवन पद्धति का जीता जागता उदाहरण थे.। विशुद्ध नियमित दिनचर्या, सादा पोशाक, कर्तव्य पूर्ति का निश्चय, उत्साह और आत्मविश्वास से परिपूर्ण ऐसा उनका व्यक्तिमत्व था.।

अनेक नामवंत संत, राजकीय नेतागण, बुद्धिजीवी लोगों ने उनके कार्य की प्रशंसा की.। सर्वश्री नरेन्द्र मोदी जी, लालकृष्ण अडवाणी जी, बालासाहब ठाकरे जी ऐसे अनेक राजनेता, संघ के सरसंघचालक, शंकराचार्य, साधुसंतों ने उनके कार्य को सराहा. अपने कार्य के लिए उन्होंने देश विदेशों में भ्रमण किया।

उनके पत्रकों में What Hinduism stands for, Are Hindus Communal? Future of Mankind, हिंदुओं पर अन्याय, रामजन्म भूमि क्यों चाहिए, वोट देने से पहले अवश्य पढें, दंगों की राजनीति, ईसाई मिशनरियों का भारत पर आक्रमण ऐसे अनेक विषय रहते थे। प्रचार का यह एक अद्भुत आंदोलन बना। ऐसे असामान्य व्यक्तित्व के धनी स्व. आनंद शंकर जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि!!

सतीश सिन्नरकर,
कार्यवाह, वन्दे मातरम् फाउंडेशन

शोक संदेश

मुम्बई। हिंदू समाज को जगाने और संगठित करने वाले वयोवृद्ध, पुरोधा, मुम्बई के प्रसिद्ध उद्योगपति, विश्व हिन्दू परिषद के पूर्व केन्द्रीय उपाध्यक्ष व वर्तमान में विहिप केन्द्रीय सलाहकार मण्डल के सदस्य श्री आनंद शंकर पंड्या जी परमात्मा इच्छा से 10 नवंबर को बैकुण्ठ धाम प्रस्थान कर गए। विभिन्न सँस्थानों के द्वारा उन्होंने भारतीय समाज को जगाया और उनको संगठित करने का भगीरथ प्रयास किया। समस्त पण्ड्या परिवार एवं सभी संगठन अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते है। दिवंगत आत्मा को ''हिन्दू विश्व'' पत्रिका की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि!

कोरी समाज ने ज्ञापन देकर मुसलमानों पर कार्रवाई करने की माँग की

कोरी समाज हिंदू परिषद–बजरंग दल ने बहादरपुर के गोरा ग्राम में कोरी समाज के लोगों पर घर में घुसकर जानलेवा हमला करने वाले आरोपियों पर कार्रवाई करने हेतु जिलाधीश तथा पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन देकर माँग की, कि अपराधियों पर अभिलंब कार्रवाई की जाए, अन्यथा कोरी समाज, समस्त हिंदू समाज, विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल के साथ आंदोलन को मजबूर होगा, जिसकी जवाबदारी प्रशासन की होगी।

deepakmishravhp@gmail.com

ललित गर्ग

अफगानिस्तान को लेकर भारत की कूटनीति कामयाबी

अफगानिस्तान को आतंकवाद के लिये इस्तेमाल किये जाने की घटनाओं को लेकर भारत की चिन्ताएँ और उन चिन्ताओं को दूर करने के लिये दिल्ली में आठ देशों के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों की बैठक एक दूरगामी सोच से जुड़ा सार्थक उपक्रम है। इस बैठक का आयोजन जरूरी था और इसका सफल आयोजन कर भारत ने यह संदेश दे दिया है कि वह न केवल दुनियाँ को आतंकमुक्त परिवेश देने, बल्कि इस संकटग्रस्त मुल्क को बचाने के लिए हरसंभव प्रयास करेगा। गत कुछ समय से चली आ रही गतिविधियों एवं उनमें भारत के रूख को देखकर माना जा रहा था कि अफगानिस्तान के मसले पर भारत निर्णायक पहल करने से बच रहा है और 'देखो व इंतजार करो' की नीति पर चल रहा है। लेकिन अब भारत ने एक ठोस कदम उठाकर जाहिर किया है कि भारत अफगानिस्तान को लेकर जागरूक था, है और रहेगा।

जगजाहिर है कि अफगानिस्तान तालीबानी बर्बरता एवं पाकिस्तानी कुचेष्टाओं के चलते इस वक्त भयानक संकटों का सामना कर रहा है। देश में भुखमरी के हालात हैं, विकास की जगह आतंकवाद मुख्य मुद्दा बना हुआ है। लाखों लोग पहले ही पलायन कर चुके हैं। सत्ता को लेकर तालिबान के उग्र तेवर एवं भीतर ही भीतर वहाँ के राजनीतिक गुटों में तना–तनी का माहौल है। देश के अंदरूनी मामलों में पाकिस्तान का दखल मुश्किलों को और बढ़ा रहा है, अधिक चिन्ता की बात तो यह है कि अफगानिस्तान की जमीन का उपयोग आतंकवाद के लिये हो रहा है। विकास की ओर अग्रसर एक शांत देश के लिये ये स्थितियाँ एवं रोजाना हो रहे आतंकी हमलों में निर्दोष नागरिकों का मारा जाना, चिन्ताजनक है। भारत यदि इन चिन्ताओं को दूर करने के लिये आगे आया है, तो यह एक सराहनीय कदम है। तालिबान की आतंकवादी मानसिकता एवं उसकी सत्तालोलुपता को दुनियाँ का कोई देश मान्यता नहीं दे रहा। इस दिल्ली क्षेत्रीय सुरक्षा संवाद में सामूहिक चिंता यह उभर कर आई कि अफगानिस्तान की जमीन से चलने वाली आतंकी गतिविधियों, कट्टरतावाद और नशीले पदार्थों की तस्करी से निपटा कैसे जाए? भारत तो शुरू से ही इस बात पर चिंता व्यक्त करता रहा है कि पाकिस्तान की तरह कहीं अफगानिस्तान भी आतंकी गतिविधियों का एक और गढ़ न बन जाए। इसलिए बैठक के बाद जारी घोषणापत्र में सभी देशों ने एक स्वर में आतंकवाद के खतरे से निपटने के लिए एकजुट होकर काम करने पर सहमति जताई।

भारत ने अफगानिस्तान के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत वहाँ का विकास चाहता है, शांति चाहता है, वहाँ उन्नत जीवनशैली चाहता है, हर इंसान को साधन–सुविधाएँ, शिक्षा–चिकित्सा देना चाहता है, उस देश का भी भारत के साथ प्रगाढ़ मैत्री संबंध है। इन सुखद स्थितियों के बीच उस जमीन का उपयोग भारत विरोधी गतिविधियों के लिये हो, यह कैसे औचित्यपूर्ण हो सकता है? यह तो विरोधाभासी स्थिति है। भारत तो वहाँ लंबे समय से विकास की बहुआयामी एवं विकासमूलक योजनाओं में सहयोग के लिये तत्पर है। वहाँ संसद भवन के निर्माण, सड़कों का नेटवर्क खड़ा करने से लेकर बांध, पुलों के निर्माण तक में भारत ने मदद की है। लेकिन अब मुश्किल तालिबान सत्ता को मान्यता देने को लेकर बनी हुई है। दो दशक पहले भी भारत ने तालिबान की सत्ता को मान्यता नहीं दी थी। जाहिर है, इसमें बड़ी अड़चन खुद तालिबान ही है। जब तक तालिबान अपनी आदिम एवं आतंकी सोच नहीं छोड़ता, मानवाधिकारों का सम्मान करना

नहीं सीखता, तब तक कौन उसकी मदद के लिए आगे आएगा? अब यह तालिबान पर निर्भर है कि वह दिल्ली में हुए क्षेत्रीय सुरक्षा संवाद को किस तरह लेता है और कैसे सकारात्मक कदम बढ़ाता है।

अफगानिस्तान लंबे समय से आतंकी संगठनों एवं आतंकवादी गतिविधियों का बड़ा केंद्र बना हुआ है, जो समूची दुनियाँ के लिये एक गंभीर खतरा है। अब अफगानिस्तान में तालिबान के सत्ता में आने के बाद यह खतरा और बढ़ गया। यह खतरा सिर्फ भारत के लिए नहीं, पूरी दुनियाँ के लिए चिंता की बात है। भारत के लिये यह अधिक चिन्ताजनक इसलिये है कि पाकिस्तान इसका इस्तेमाल कश्मीर में आतंकवाद को उग्र करने में करना चाहता है। इसलिए दुनियाँ की बड़ी शक्तियों एवं अफगानिस्तान के पड़ोसी राष्ट्रों को मिल कर इससे निपटने की जरूरत को महसूस करते हुए ही भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं उनके सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने क्षेत्रीय सुरक्षा संवाद को आयोजित करने का सूझबूझपूर्ण निर्णय लिया। इस बैठक में सात देशों ने भारत के सुर में सुर मिलाकर कर आश्वस्त करने का प्रयास किया कि अफगानिस्तान को आतंकवाद का पनाहगाह नहीं बनने दिया जायेगा। इस बैठक ने अफगानिस्तान को लेकर भारत कुछ कर पाने की स्थिति में नहीं है, वाली सोच को निरस्त किया है।

दिल्ली सुरक्षा संवाद में रूस, ईरान और अफगानिस्तान के पाँच पड़ोसी देशों उज्बेकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और कजाकिस्तान के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों के साथ मिलकर भारत ने जिस तरह से कदम बढ़ाए हैं, उसे बड़ी कूटनीतिक कामयाबी के रूप में देखा जाना चाहिए। यह कोई कम महत्त्वपूर्ण बात नहीं है कि इतने देशों ने भारत के अनुरोध और पहल को स्वीकार किया और अफगानिस्तान से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की। बैठक में भारत ने पाकिस्तान और चीन को भी बुलाया था, पर दोनों देशों ने इस बैठक से कन्नी काट ली। जाहिर है, ये दोनों देश अफगानिस्तान के मुद्दे पर भारत के कूटनीतिक प्रयासों को पचा नहीं पा रहे हैं, क्योंकि ये ही दोनों देश यहाँ आतंकवाद को भारत के विरोध में पनपा रहे हैं। इससे इन दोनों के भारत विरोधी रुख की ही पुष्टि होती है। यह तो सारे देश समझ ही रहे हैं कि अगर मिलकर अफगानिस्तान की चुनौतियों का सामना नहीं किया, तो इससे क्षेत्रीय शांति भी खतरे में पड़ जाएगी। इसलिए कोशिशें ऐसी हों, जिससे तालिबान पाकिस्तान जैसे देशों के प्रभाव से मुक्त होकर पड़ोसी देशों और भारत जैसे हितैषी देशों की चिंताओं को समझे। अफगानिस्तान के मानवीय संकट को देखते हुए कोई भी देश तालिबान से टकराव नहीं चाहता, बल्कि उसकी मदद करना चाहता है। यही दिल्ली संवाद का मकसद भी है।

इस सुरक्षा संवाद की सार्थकता तभी सामने आयेगी, जब अफगानिस्तान में आतंक का नंगा नाच होने से रोका जा सकेगा, वहाँ अराजकता एवं बर्बरता की कालिमा धूलेगी। महिलायें–बच्चे तालिबानी क्रूरता के शिकार न हो सकेंगे। आतंकवाद के खतरे की संभावनाओं को देखते हुए भारत ने अफगानिस्तान पर दबाव बढ़ा दिया है। भारत ने अफगानिस्तान से साफ कहा है कि उसे यह सुनिश्चित करना होगा कि वह अपनी जमीन का इस्तेमाल आतंकवाद के लिए न होने दे। साथ ही, अलकायदा, लश्कर–ए–तैयबा और जैश–ए–मोहम्मद जैसे आतंकी संगठनों के खिलाफ कार्रवाई भी करे। दरअसल, आतंकवाद को लेकर भारत की चिंता बेवजह नहीं हैं। भारत ने लंबे समय से आतंकवाद के खतरे को झेला है एवं कश्मीर की मनोरम वादियाँ सहित भारत के भीतरी हिस्सों ने तीन दशक से भी ज्यादा समय तक सीमा पार आतंकवाद झेला है। अब भारत के साथ सात देशों की ताकत है, मिलकर ऐसा वातावरण बनाये कि आतंकी सोच को विराम मिले एवं वहाँ के जनजीवन को सुखद परिवेश एवं शांति, अमन–चैन की सांसें मिले। मानवता की रक्षा एवं आतंकवाद मुक्त अफगानिस्तान की संरचना की इस कोशिश को पंख लगे। कुल मिलाकर, मानवीयता, उदारता, शांति, अहिंसा और समझ की खिड़की खुली रहनी चाहिए, ताकि इंसानियत शर्मसार न हो, इसके लिये भारत सहित आठ देशों एवं समूची दुनियाँ को व्यापक प्रयत्न करने होंगे। इसके साथ अफगानिस्तान की ऐसी शक्तियाँ, जो आतंकवाद के खिलाफ हैं, उनको भी सक्रिय होना होगा। क्योंकि उनकी जमीन को कलंकित एवं शर्मसार करने का षडयंत्र हो रहा है।

lalitgarg11@gmail.com

विहिप की खण्ड समिति का सम्मेलन

विश्व हिंदू परिषद इंदौर विभाग का खंड समिति सम्मेलन, मधुर मिलन गार्डन इंदौर में संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में इंदौर विभाग की 225 से अधिक समिति के दायित्ववान कार्यकर्ता उपस्थित रहे। मंच पर विश्व हिन्दू परिषद के केंद्रीय महामंत्री मिलिंद जी के अतिरिक्त प्रांत अध्यक्ष महेंद्र जी गुप्ता, प्रांत मंत्री सोहन जी विश्वकर्मा, प्रांत संगठन मंत्री नंददास जी दंडोतिया और विभाग मंत्री रवि कसेरा उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता केंद्रीय महामंत्री श्री मिलिंद जी परांडे का मार्गदर्शन कार्यकर्ताओं को प्राप्त हुआ।

महारानी चेनम्मा

मुरारी शरण शुक्ल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

अँग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने वाली पहली भारतीय महिला शासक, कित्तूर चेनम्मा के नाम से विख्यात महारानी चेनम्मा का जन्म कर्नाटक के बेलगाम में कित्तूर के पास गाँव ककती में 23 अक्टूबर 1778 ई को हुआ था। रानी का जन्म लिंगायत परिवार में हुआ था। रानी बचपन में ही घुड़सवारी, तलवारबाजी, धनुर्विद्या में पारंगत हो गई थी। 15 वर्ष की आयु में उनका विवाह बेलगाम में कित्तूर राजघराने में मल्लासरजा से हुआ था। चेन्नम्मा के जीवन में प्रकृति ने कई बार क्रूर मजाक किया। पहले पति का निधन हो गया। कुछ साल बाद एकलौते पुत्र का भी निधन हो गया और वह अपनी माँ को अँग्रेजों से लड़ने के लिए अकेला छोड़ गया।

रानी का शौर्यपूर्ण जीवन

रानी ने अँग्रेजों के विरुद्ध 1824 ई में विद्रोह किया। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से 33 वर्ष पूर्व ईस्ट इंडिया कम्पनी की हड़प नीति के विरुद्ध अँग्रेजों से सशस्त्र संघर्ष किया था। अन्तिम संघर्ष में रानी वीरगति को प्राप्त हुई। भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाले देश के सबसे पहले शासकों में रानी की गिनती होती है। रानी चेनम्मा के साहस एवं उनकी वीरता के कारण देश के विभिन्न हिस्सों, विशेषकर कर्नाटक में उन्हें विशेष सम्मान प्राप्त है और उनका नाम आदर के साथ लिया जाता है। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के संघर्ष के पहले ही रानी चेनम्मा ने युद्ध में अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए थे। हालाँकि उन्हें युद्ध में सफलता नहीं मिली और उन्हें कैद कर लिया गया। अँग्रेजों की कैद में ही रानी चेनम्मा का निधन हो गया।

टकराव का आरम्भ

राजा मल्लासारजा की रानी चेनम्मा ने पुत्र की मौत के बाद शिवलिंगप्पा को अपना उत्ताराधिकारी बनाया। अंग्रेजों ने रानी के इस कदम को स्वीकार नहीं किया और शिवलिंगप्पा को पद से हटाने का आदेश दिया। यहीं से उनका अंग्रेजों से टकराव शुरू हुआ और उन्होंने अंग्रेजों का आदेश स्वीकार करने से इनकार कर दिया।

अँग्रेजों की हड़प नीति

अंग्रेजों की नीति "डाक्ट्रिन ऑफ लैप्स" (हड़प नीति) के अन्तर्गत दत्तक पुत्रों को राज करने का अधिकार नहीं था। भारत में ब्रिटिश गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी इस नीति का प्रतिपादक था। यद्यपि यह नीति ईस्ट इंडिया कंपनी पहले से चला रही थी। उसने इस नीति के अन्तर्गत भारत के देशी राजाओं की सम्पति और राज्य हड़पने का एक कुत्सित षड्यंत्र रचा था, जिसके विरुद्ध तत्कालीन अनेक राजाओं ने अँग्रेजी शासन से विद्रोह किया था। इस नीति के अंतर्गत अँग्रेज उस सम्बंधित राज्य को अपने साम्राज्य में मिला लेते थे। रानी चेन्नम्मा और अँग्रेजों के बीच हुए युद्ध में डलहौजी से पूर्व की इस नीति की ही प्रमुख भूमिका थी। 1857 के स्वाधीनता संग्राम में भी इस नीति की प्रमुख भूमिका थी। अँग्रेजों की इस नीति सहित विभिन्न नीतियों का विरोध करते हुए कई रजवाड़ों ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था।

यद्यपि भारत में गवर्नर जनरल के रूप में डलहौजी का कार्यकाल 1848–1856 तक था, किन्तु इस हड़प नीति का आरम्भ अँग्रेजों ने डलहौजी से पूर्व से ही कर दिया था, जिसका शिकार रानी का कित्तूर राज्य भी हुआ। परिणामतः रानी ने सशत्र विद्रोह किया। इसी हड़प नीति ने अन्तर्गत

अँग्रेजों ने 1856 में अवध के राज्य का विलय अँग्रेजी शासन में कर लिया था, जो 1857 के विद्रोह का मूल कारण बना।

कित्तूर हड़पने की कोशिश

ब्रिटिश शासन ने शिवलिंगप्पा को निर्वासित करने का आदेश दिया। लेकिन चेन्नम्मा ने अंग्रेजों का आदेश नहीं माना। उन्होंने बॉम्बे प्रेसिडेंसी के लेफ्टिनेंट गवर्नर लॉर्ड एलफिंस्टन को एक पत्र भेजा। उन्होंने कित्तुर के मामले में हड़प नीति नहीं लागू करने का आग्रह किया। लेकिन उनके आग्रह को अँग्रेजों ने ठुकरा दिया। इस तरह से ब्रिटिश और कित्तुर के बीच लड़ाई शुरू हो गई। अँग्रेजों ने कित्तुर के खजाने और आभूषणों के जखीरे को जब्त करने की कोशिश की, जिसका मूल्य करीब 15 लाख रुपये था। लेकिन वे सफल नहीं हुए।

रानी का संघर्ष

अँग्रेजों ने 20,000 सिहापियों और 400 बंदूकों के साथ कित्तुरु पर हमला कर दिया। अक्टूबर 1824 में उनके बीच पहली लड़ाई हुई। उस लड़ाई में ब्रिटिश सेना को भारी नुकसान उठाना पड़ा। कलेक्टर और अँग्रेजों का एजेंट सेंट जॉन ठाकरे कित्तुर की सेना के हाथों मारा गया। चेन्नम्मा के सहयोगी अमातूर बेलप्पा ने उसे मार गिराया था और ब्रिटिश सेना को भारी नुकसान पहुँचाया था। दो ब्रिटिश अधिकारियों सर वॉल्टर एलियट और स्टीवेंसन को बंधक बना लिया गया। अँग्रेजों ने वादा किया कि अब युद्ध नहीं करेंगे, तो रानी चेन्नम्मा ने ब्रिटिश अधिकारियों को रिहा कर दिया। लेकिन अँग्रेजों ने धोखा दिया और फिर से युद्ध छेड़ दिया। इस बार ब्रिटिश अफसर चौपलिन ने पहले से भी ज्यादा सिपाहियों के साथ हमला किया। सर थॉमस मुनरो का भतीजा और सोलापुर का सब कलेक्टर मुनरो मारा गया। रानी चेन्नम्मा अपने सहयोगियों संगोल्ली रयन्ना और गुरुसिदप्पा के साथ जोरदार तरीके से लड़ीं। लेकिन अँग्रेजों के मुकाबले कम सैनिक होने के कारण वह हार गईं। उनको बेलहोंगल के किले में कैद कर दिया गया। वहीं 21 फरवरी 1829 को उनकी मौत हो गई।

कर नीति का विरोध

डाक्ट्रिन ऑफ लैप्स के अलावा रानी चेन्नम्मा का अँग्रेजों की कर नीति को लेकर भी विरोध था और उन्होंने उसे मुखर आवाज दी। रानी चेन्नम्मा पहली महिलाओं में से थीं, जिन्होंने अनावश्यक हस्तक्षेप और कर संग्रह प्रणाली को लेकर अँग्रेजों का विरोध किया।

बलिदान

अँग्रेजों के खिलाफ युद्ध में रानी चेन्नम्मा ने अपूर्व शौर्य का प्रदर्शन किया, लेकिन वह लंबे समय तक अँग्रेजी सेना का मुकाबला नहीं कर सकी। उन्हें कैद कर बेलहोंगल किले में रखा गया, जहाँ 21 फरवरी 1829 को उनकी मृत्यु हो गई। पुणे–बंगलुरु राष्ट्रीय राजमार्ग पर बेलगाम के पास कित्तूर का राजमहल तथा अन्य भव्य भवन रानी के गौरवशाली अतीत की स्मृति दिलाने के लिए अब भी विद्यमान हैं।

पावन स्मृति

भले ही रानी चेन्नम्मा आखिरी लड़ाई में हार गईं, लेकिन उनकी वीरता को हमेशा याद किया जाएगा। उनकी पहली जीत और विरासत का जश्न अब भी मनाया जाता है। हर साल कित्तुर में 22 से 24 अक्टूबर तक कित्तुर उत्सव लगता है, जिसमें उनकी जीत का जश्न मनाया जाता है। रानी चेन्नम्मा को बेलहोंगल तालुका में दफनाया गया है। उनकी समाधि एक छोटे से पार्क में है, जिसकी देखरेख सरकार के जिम्मे है। उनकी एक प्रतिमा नई दिल्ली के पार्लियामेंट कंप्लेक्स में लगी है। कित्तुरु की रानी चेन्नम्मा की उस प्रतिमा का अनावरण 11 सितंबर, 2007 को तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटिल ने किया था। प्रतिमा को कित्तुर रानी चेन्नम्मा स्मारक कमिटी ने दान दिया था, जिसे विजय गौड़ ने तैयार किया था।

पंचगव्य आयुर्वेद चिकित्सा कार्यशाला पांचजन्य भवन में सम्पन्न

गुवाहाटी, 22 अक्टूबर। भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद, आयुर्वेदिक मेडिकल ऑर्गेनाइजेशन, आरोग्य भारती, विश्व हिंदू परिषद के गोरक्षा की प्रेरणा से गोविज्ञान अनुसंधान केंद्र देवलापार, नागपुर के द्वारा शुक्रवार को राजधानी के पांचजन्य भवन में पंचगव्य आयुर्वेद चिकित्सा कार्यशाला सम्पन्न हुई। यह कार्यशाला विहिप गोरक्षा के केन्द्रीय मंत्री उमेश चन्द्र पोरवाल, विहिप सह संगठन मंत्री हर सिंह तेरान, प्रान्त गोरक्षा प्रमुख सुरेंद्र गोयल एवं प्रान्त पंचगव्य चिकित्सा प्रमुख वैद्य ममता अमित मिश्रा, वैद्य दीप्ति रेखा शर्मा आयुर्वेदिक महाविद्यालय द्वारा गो पूजन के साथ सम्पन्न कराई गई।

कार्यशाला में नागपुर गो विज्ञान अनुसंधान केन्द्र प्रमुख एवं विहिप गोरक्षा विभाग के केन्द्रीय मंत्री सुनील बालकृष्ण मानसिंहका एवं पंचगव्य चिकित्सा प्रमुख प्रधान वैद्य नन्दिनी भोजराज ने वैद्यों एवं गौशाला संचालकों को प्रशिक्षित किया तथा पंचगव्य आयुर्वेद चिकित्सा पर शुद्ध देशी गोवंश का संरक्षण, संवर्धन के साथ गोबर, गोमूत्र, गो दुग्ध, दही, गोघृत पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। कार्यशाला में विशिष्ट अतिथि के रूप में राधाकृष्ण गो एवं कृषि अनुसंधान केंद्र, गुवाहाटी के संचालक प्रभु दयाल सिवोटिया ने हिस्सा लिया। अंकुर बेजवरुवा ने कार्यशाला का संचालन किया। इस कार्यशाला में पंचगव्य चिकित्सा प्रमुख विवेकानंद हेल्प ग्लोबल संचालिका वैद्य डॉ. ममता अमित मिश्रा ने संकल्प लिया कि पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र में पंचगव्य आयुर्वेद चिकित्सा के लिए हम सब मिलकर आगे बढेंगे।

चेन्नम्मा नाम की दो रानी कर्नाटक में हुई हैं। एक कित्तूर की रानी थी, तो दूसरी केलाड़ी की रानी थी। कित्तूर की रानी ने अँग्रेजों से युद्ध किया था, तो केलाड़ी की रानी ने औरंगजेब से युद्ध किया था। कित्तूर की रानी थी तो बहुत बहादुर, किन्तु वो अपना अन्तिम युद्ध अंग्रेजों से हार गई थी। किन्तु केलाड़ी की रानी अपने किसी भी युद्ध में कभी पराजित नहीं हुई। औरंगजेब ने भी उनके सामने पराजय स्वीकार करते हुए समझौता कर लिया था। दोनों का नाम एक ही होने पर भी भिन्न कालखंड में जन्मी दोनों रानियाँ अद्भुत वीरांगनाएँ थी, जिनपर आज भी भारत को नाज है। भारत माता को ऐसी बेटियों की आज भी तलाश है।

केलाड़ी की रानी चेनम्मा

चेन्नम्मा, कर्नाटक के केलाड़ी साम्राज्य की रानी थी। वे सागर, कर्नाटक के स्थानीय व्यापारी सिद्दप्पा शेट्टार की बेटी थी। केलाड़ी साम्राज्य, जिसे बेदनूर और इक्केरी के नाम से भी जाना जाता है, का गठन विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद हुआ था। 1667 ईस्वी में चेनम्मा का विवाह राजा सोमशेखर नायक से हुईं। 1677 में सोमशेखर नायक की मृत्यु के बाद, चेनम्मा ने केलाड़ी नायक वंश के प्रशासन को कुशलता से संभाला। 25 वर्षों के अपने शासनकाल के दौरान, उन्होंने औरंगजेब के नेतृत्व में केलाड़ी में कब्ज़ा करने आई मुगल सेना को अपने राज्य से खदेड़ दिया था। उन्होंने बसवप्पा नायक को गोद लिया था, जो उनके करीबी रिश्तेदारों में से एक था, जो आगे चलकर हिरिया बसप्पा नायक के रूप में उन्हें प्रतिस्थापित किया। चेन्नम्मा ने पुर्तगालियों के साथ काली मिर्च और चावल जैसी वस्तुओं को लेकर व्यापारिक समझौतें किये थे।

औरंगजेब द्वारा हमला

शिवाजी के पुत्र राजाराम छत्रपति ने उनसे आश्रय मांगा, जो उस समय मुगल बादशाह औरंगजेब से छिप रहे थे, उन्होंने अपने मंत्रीगण के साथ बैठक के बाद उन्हें आश्रय देते हुए उनका सम्मान के साथ व्यवहार किया, जिसके कारण औरंगज़ेब ने केलाड़ी पर हमला कर दिया। चेन्नम्मा ने बिना हार के युद्ध लड़ा और मुगलों के साथ युद्ध एक संधि के साथ समाप्त हो गया। केलाड़ी साम्राज्य के अधीनस्थ, सोधे के सदाशिव ने भी राजाराम को ऋण के माध्यम से मदद की। मैसूर के शासकों और बाद में ब्रिटिशों से स्वायत्तता खोने में केलाड़ी साम्राज्य ही अन्तिम राज्य था। चेन्नम्मा के मंत्रीमंडल की अध्यक्षता टिम्मन्ना नाइक ने की, जो विजयनगर के एक सेनापति के वंशज थे।

उन्हें रानी अब्बाका, ओनके ओबाव्वा और कित्तूर चेन्नम्मा के साथ कन्नड़ महिला वीरता का प्रतीक माना जाता है। मिरजान किला केलाड़ी चेनम्मा द्वारा बनवाया गया था। चेनम्मा एक बहुत ही गुणी और धर्मपरायण महिला होने के साथ–साथ अपने समय की व्यावहारिक प्रशासक भी थीं।

चेनम्मा ने केलाड़ी नायक वंश के प्रशासन को कुशलता से संभाला। 25 वर्षों के अपने शासनकाल के दौरान, उन्होंने औरंगजेब के नेतृत्व में केलाड़ी में कब्ज़ा करने आई मुगल सेना को अपने राज्य से खदेड़ दिया था। उन्होंने बसवप्पा नायक को गोद लिया था, जो उनके करीबी रिश्तेदारों में से एक था, जो आगे चलकर हिरिया बसप्पा नायक के रूप में उन्हे प्रतिस्थापित किया।

लाभदायक है सौंफ

सौंफ में कई औषधीय गुण मौजूद होते हैं, जिनका सेवन करने से स्वास्थ्य को लाभ होता है। सौंफ हर उम्र के लोगों के लिए लाभदायक होती है। सौंफ प्रतिदिन घर में प्रयुक्त किए जाने वाले मसालों में से एक है। इसका नियमित उपयोग सेहत के लिए लाभदायक है। प्रायः गर्मियों की सब्जियों में इसका उपयोग किया जाता है, क्योंकि इसकी तासीर ठंडी है, पर यह जठराग्नि को मंद नहीं करती। सौंफ त्रिदोषनाशक है। सौंफ में विटामिन सी की जबर्दस्त मात्रा है और इसमें आवश्यक खनिज भी हैं, जैसे कैल्शियम, सोडियम, फॉस्फोरस, आयरन और पोटैशियम। चमत्कारी सौंफ के सेहत के लिए फायदे कुछ इस प्रकार हैं–

पेट की समस्याओं के लिए सौंफ बहुत लाभदायक होती है। सौंफ खाने से पेट और कब्ज की समस्या नहीं होती। सौंफ को मिश्री या चीनी के साथ पीसकर चूर्ण बना लीजिए, रात को सोते समय लगभग 5 ग्राम चूर्ण को हल्के गुनगुने पानी के साथ सेवन कीजिए। पेट की समस्या नहीं होगी व गैस व कब्ज दूर होगा। सौंफ आपकी याददाश्त बढ़ाती है, निगाह तेज करती है, खाँसी भगाती है और कोलेस्ट्रॉल स्तर को नियंत्रण में रखती है। अगर आप चाहते हैं कि आपका कोलेस्ट्रॉल स्तर न बढ़े तो खाने के लगभग 30 मिनट बाद एक चम्मच सौंफ खा लें। सूखी, रोस्टेड और कच्ची सौंफ को बराबर मात्रा में मिला लें। इसे खाने के बाद खाएँ। इससे पाचनक्रिया बेहतर रहेगी और आप हल्का महसूस करेंगे।

अगर आप एक चम्मच सौंफ 2 कप पानी में उबाल लें और इस मिश्रण को दिन में दो–तीन बार लें, तो आपकी आँतें अच्छा महसूस करेंगी और खाँसी भी लापता हो जाएगी। सौंफ की पत्तियों में खाँसी संबंधी परेशानियाँ जैसे दमा व ब्रोन्काइटिस को दूर रखने की भी क्षमता होती है। सौंफ को अंजीर के साथ खाने से खाँसी व ब्रोन्काइटिस ठीक होती है। साथ ही मासिक चक्र को नियमित बनाने के लिए सौंफ को गुड़ के साथ खाएँ।

गर्मियों में पीएँ सौंफ की चाय

गर्मियों में गरम चाय पीकर पेट में जलन होने लगती है, पर चाय के शौकिन करें तो क्या करें? तो क्यों ना चाय के समय त्रिदोष नाशक सौंफ की ताजगी भरी चाय हो जाए। एक कप पानी में 2 चम्मच सौंफ और थोड़ी सी इलायची कूटकर मिलायें और उबाल लें। स्वादानुसार शक्कर डालें। अब छान कर इसमें स्वाद और सजावट के लिए थोड़ी सी पुदीना की पत्ती डालें। लीजिये तैयार है सौंफ की चाय। यह गर्मी से राहत देती है। पाचन सम्बन्धी सभी परेशानियों से राहत देती है। साथ ही दिमाग और आँखों के लिए भी अच्छी है।

- भोजन के बाद रोजाना 30 मिनट बाद सौंफ लेने से कॉलेस्ट्रोल काबू में रहता है।
- 5–6 ग्राम सौंफ लेने से लीवर और आँखों की ज्योति ठीक रहती है। अपच संबंधी विकारों में सौंफ बेहद उपयोगी है।
- बिना तेल के तवे पर तली हुई सौंफ और बिना तली सौंफ के मिक्सचर से अपच के मामले में बहुत लाभ होता है।
- दो कप पानी में उबली हुई एक चम्मच सौंफ को दो या तीन बार लेने से अपच और कफ की समस्या समाप्त होती है।
- यह शिशुओं के पेट और उनके पेट के अफारे को दूर करने में बहुत उपयोगी है।
- सौंफ के पाउडर को शक्कर के साथ बराबर मिलाकर लेने से हाथों और पैरों की जलन दूर होती है।

(भारतीय धरोहर से साभार)

आजादी का अमृत महोत्सव निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं का सम्मान

नई दिल्ली, 13 नवम्बर। लायंस क्लब नई दिल्ली अलकनंदा द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित 'आजादी का अमृत महोत्सव' विषयक हिंदी निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं का सम्मान समारोह हॉलमार्क बैंकट हॉल में आयोजित हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि रिजनल चेयरमैन लॉयन इंद्रजीत सिंह ने कहा कि आजादी का अमृत महोत्सव समूचे राष्ट्र के लिए गौरव की बात है। हमें इस अवसर को यादगार एवं जन–जन की आस्था से जोड़ने की जरूरत है। लायंस क्लब नई दिल्ली अलकनंदा ने इसके लिए एक सार्थक पहल की है।

लायंस क्लब नई दिल्ली अलकनंदा के अध्यक्ष लॉयन ललित गर्ग, डिस्ट्रिक के उपाध्यक्ष द्वितीय लॉयन प्रदीप सिंघल एवं प्रोजेक्ट मैनेजमेंट कमेटी के प्रमुख लॉयन नरेन्द्र छाबड़ा एवं लॉयन इंद्रजीत सिंह ने इस निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को नकद राशि, प्रशस्ति पत्र एवं शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया। विदित हो कि प्रतियोगिता में प्रथम–ऋतु मित्तल, द्वितीय–ऋचा जैन, तृतीय–प्रभात छापरिया एवं मीनाक्षी वर्मा रहे। प्रथम पुरस्कार के रूप में 5100 रुपये, द्वितीय 3100 रुपये एवं तृतीय 2100–2100 रूपये के चेक प्रदत्त किये गए। इन पुरस्कारों के प्रायोजक लॉयन सुशील बियानी थे। क्लब के अध्यक्ष लॉयन ललित गर्ग ने कहा कि हिंदी भाषा को प्रोत्साहन देने के लिए यह प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। वर्तमान समय में हिंदी सबसे अधिक बोली जाने वाली दुनियाँ की तीसरी भाषा है। दुनियाँ में हिंदी भाषा की प्रतिष्ठा हो रही है, जबकि देश में हिंदी की उपेक्षा देखने को मिलती है। वर्तमान सरकार से अपेक्षा है कि वह आजादी के अमृत महोत्सव पर हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठापित करे। कार्यक्रम का संयोजन लॉयन मुनीष गुप्ता ने किया एवं आभार ज्ञापन सचिव लॉयन अभिषेक जैन ने किया।

singh_barun@hotmail.com

बजरंग दल ने किया रक्तदान

अशोकनगर, 01 नवम्बर। विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल द्वारा हुतात्मा दिवस के उपलक्ष्य में शासकीय अस्पताल में रक्तदान शिविर रखा गया, जिसमें प्रांत धर्मप्रसार प्रमुख दीपक मिश्रा ने बताया कि बजरंग दल 1990 में बलिदान हुए कारसेवकों की स्मृति में पूरे देश में रक्तदान शिविर आयोजित करता है। विभाग संयोजक अवधेश तिवारी ने कहा कि उस समय की राम विरोधी सरकार ने भगवान राम की भूमि पर राम भक्तों की हत्याएँ करायी, राम भक्तों का बलिदान हुआ। उसी उपलक्ष्य में वीर बजरंगी रक्तदान करते हैं। जिला संयोजक बेदराम लोधी ने कहा कि बजरंग दल राष्ट्र की रक्षा के लिए समर्पण व त्याग के साथ काम करता है। बजरंग दल सेवा करता है, रक्तदान करता है और राष्ट्र द्रोहियों को सबक भी सिखाता है।

विभाग संयोजक आदेश तिवारी, वेद राम लोधी, सौरभ रघुवंशी, दीपक जोशी सहित अनेक बजरंगियों ने रक्तदान किया। रक्तदान का शुभारंभ सिविल सर्जन डी.के. भार्गव जिला अध्यक्ष दिनेश जैन, दीपक मिश्रा, रामकुमार चौधरी ने भगवान राम का पूजन कर किया। इस अवसर पर 21 यूनिट रक्तदान हुआ।

deepakmishravhp@gmail.com

रसायन मुक्त खेती के लिए
गो कृपा अमृतम कल्चर का निःशुल्क वितरण आरंभ

गुवाहाटी, 07 अक्टूबर (हि.स)। नवरात्रि के पहले दिन से राज्य में गुवाहाटी में विश्व हिन्दू परिषद (विहिप)–गोरक्षा विभाग ने रसायन मुक्त खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों के बीच निःशुल्क गो कृपा अमृतम् कल्चर का वितरण कार्यक्रम आरंभ किया है। यह कार्यक्रम गुरुवार को कामरूप जिला के रानी में भारतीय किसान मोर्चा द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में विहिप–गोरक्षा विभाग ने किसानों के बीच गो कृपा अमृतम् कल्चर का वितरण शुरू किया।

गो कृपा अमृतम् कल्चर के बारे महत्वपूर्ण जानकारी विहिप प्रांत सह गोरक्षा प्रमुख अंकुर बेजबरुवा ने कृषकों को अवगत कराई एवं फार्म भराकर कृषकों को निःशुल्क गो कृपा अमृतम् कल्चर वितरण किया। इस मौके पर विहिप के गोरक्षा प्रांत प्रमुख सुरेन्द्र गोयल, गुजरात के अहमदाबाद स्थित बंशीगीर गौशाला से प्रशिक्षण प्राप्त करके आये मनोज बरुवा ने अन्य सहयोगी कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर किसानों को रसायन मुक्त खेती करने के लिए गो कृपा अमृतम् कल्चर के फायदे बताये। शुद्ध और कम खर्चे में सरलता से इस गो कृपा अमृतम् कल्चर से शुद्ध एवं सही फसलों की पैदावार प्राप्त किया जा सकता है। इस गो कृपा अमृतम् कल्चर का देश के 22 राज्यों के किसान बड़ी सँख्या में इसका उपयोग कर फसल की पैदावार को बढ़ा रहे हैं। विहिप गोरक्षा के केन्द्रीय मंत्री एवं प्रभारी गुवाहाटी क्षेत्र उमेश चन्द्र पोरवाल ने बताया कि असम में विहिप गोरक्षा विभाग गो कृपा अमृतम् कल्चर निःशुल्क वितरण का कार्यक्रम शुरू किया है। आगामी 11 नवम्बर को गोपाष्टमी पर्व से गो कृपा अमृतम् कल्चर का एक रथ चलाया जाएगा। यह रथ असम के सभी जिलों में कृषकों को रसायन मुक्त खेती करने के लिए जन जागरण फैलाएगा। साथ ही गो कृपा अमृतम् कल्चर का निःशुल्क वितरण भी किया जाएगा।

umeshporwal11@gmail.com

हरियाणा प्रान्त बैठक

विश्व हिंदू परिषद की युवा शाखा बजरंग दल की हरियाणा प्रदेश की बैठक 14–11–2021 रविवार को फरीदाबाद विभाग के जिला पलवल के श्यामा कुंज में संपन्न हुई। बैठक में हरियाणा के 27 संगठनात्मक जिला, 7 विभाग से बंजरग दल के कार्यकर्ता उपस्थित रहे। बैठक में उपस्थित बजरंग दल के कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए उत्तर भारत के क्षेत्रीय संगठन मंत्री मुकेश खांडेकर ने कहा कि बजरंग दल के सभी कार्यकर्ताओं को सप्ताह में हर मंगलवार को एकत्रित होकर अपने निकट के मंदिर में सम्पूर्ण हिंदू समाज को साथ लेकर हनुमान चालीसा का पाठ करना है, सप्ताहिक हनुमान चालीसा के माध्यम से युवाओं में देशभक्ति के साथ राष्ट्रभक्ति का भाव जागृत करना है। उन्होंने कहा कि बजरंग दल का प्रत्येक कार्यकर्ता श्रीराम भक्त हनुमान का रूप है। हिंदू समाज की सेवा व सुरक्षा करने वाले राष्ट्रवादी युवाओं का संगठन 08 अक्तूबर 1984 को स्थापित किया गया। तब से लेकर आज तक हिंदू स्वाभिमान और सुरक्षा के लिए बजरंग दल के कार्यकर्ता प्रत्येक क्षण तत्पर रहते हैं। बजरंग दल का सूत्रवाक्य सेवा, सुरक्षा और सँस्कार है। युवाओं से संपर्क साधने के लिए बजरंग दल खेल प्रतियोगिता व अखाड़े का भी संचालन करता है। इसमें युवाओं को शारीरिक रूप से मजबूत करने का कार्य करता है। कुछ नवीन दायित्वों की भी घोषणा हुई, जिसमें पलवल से मुख्य रूप से लक्ष्मण बजरंगी को बजरंगदल जिला सह–संयोजक बनाया गया है।

ahluwaliasahil54@gmail.com

वाराणसी में सँस्कृति संसद

२०२४ से पहले खत्म हो मंदिरों से सरकारी अधिग्रहण : आलोक कुमार

वराणसी, 14 नवम्बर। मंदिर आराधना स्थल मात्र नहीं हैं। मंदिर सनातन सँस्कृति, सभ्यता व सँस्कारों को संजोते हैं। कभी समाज का पूरा तंत्र मंदिरों के जरिए संचालित होता था। उसी व्यवस्था को लागू करने की मुखर आवाज उठी सँस्कृति संसद में। विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आलोक कुमार ने समस्त राज्य सरकारों को चेतावनी देते हुए कहा कि 2024 से पहले मंदिरों से सरकारी अधिग्रहण खत्म किया जाए। ऐसा नहीं हुआ, तो विहिप लड़ाई लड़ेगी। दैनिक जागरण व गंगा महासभा की ओर से रुद्राक्ष सम्मेलन केंद्र में आयोजित सँस्कृति संसद के अंतिम दिन रविवार को आलोक कुमार की ओजस्वी वाणी सुनकर रुद्राक्ष सम्मेलन केंद्र करतल ध्वनि व हर–हर महादेव के उद्घोष से गूंज उठा।

अखिल भारतीय संत समिति व श्रीकाशी विद्वत परिषद के मार्गदर्शन में भारतीय सँस्कृति के प्रमुख चिंतक व दैनिक जागरण के पूर्व प्रधान संपादक स्व. नरेन्द्र मोहन की स्मृतियों को समर्पित विचार मंथन में आलोक कुमार ने अयोध्या में श्रीराम मंदिर निर्माण के बाद अनौपचारिक रूप से विहिप का नया एजेंडा तय कर दिया। उन्होंने कहा कि मंदिरों के साथ पहले गुरुकुल चलता था। गुरुकुल में बच्चों के पढने, रहने, खाने व पहनने का निःशुल्क प्रबंध होता था। अधिकतर बच्चे पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति के होते

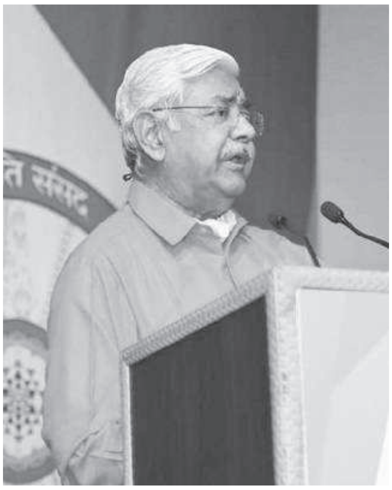

थे। इसके जरिए समाज का हर वर्ग एकजुट रहता था। मुगलों और अंग्रेजों ने उस परंपरा को खत्म कर दिया। अंग्रेजों ने बेहतर प्रबंधन व प्रशासन का हवाला देकर मंदिरों का अधिग्रहण कर लिया। कुछ राज्यों में अधिग्रहण तो अभी तक है। अंग्रेजों के समय तीन प्रतिशत दिया जाने वाला टैक्स बढ़ते–बढ़ते 18 प्रतिशत हो गया है। मंदिर प्रबंधन को ऑडिट शुल्क अलग से देना होता है। यह व्यवस्था स्वीकार्य नहीं है। भारत के संविधान में जितना अधिकार अल्पसँख्यकों को दिया गया है, उतना ही हिंदुओं को मिले।

बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी ज्योतिष विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. रामचंद्र पांडेय ने नई पीढ़ी को उसकी सँस्कृति व सँस्कारों से जोड़ने पर बल दिया। काशी विद्वत परिषद के महामंत्री प्रो. रामनारायण द्विवेदी ने कहा कि जैसे मदरसों में मनचाही शिक्षा देने की छूट है, वैसी सुविधा मठ–मंदिरों को मिलनी चाहिए। विहिप के संत धर्माचार्य संपर्क प्रमुख अशोक तिवारी ने अधिगृहीत किए गए मंदिरों पर श्वेतपत्र जारी करने की माँग की। उन्होंने कहा कि जब मंदिरों का अधिग्रहण किया गया, उस समय कितनी संपत्ति थी और अब कितनी है, इसे स्पष्ट किया जाना चाहिए। अध्यक्षता कर रहे अखिल भारतीय संत समिति के अध्यक्ष आचार्य अविचल दास ने मंदिरों की न्यायिक, धार्मिक व आर्थिक स्थिति स्पष्ट करते हुए, उसे समस्त बंधनों से मुक्त करने पर जोर दिया।

सँस्कृति संसद में विहिप के कार्याध्यक्ष आलोक कुमार ने भविष्य का एजेंडा बताते हुए घोषणा की, 'मंदिरों को सरकारी अधिग्रहण से मुक्त कराने, मंदिरों का पैसा हिंदुओं के लिए खर्च करने, शिक्षा व्यवस्था में बदलाव और मतांतरण करने वाले अनुसूचित जाति के लोगों को आरक्षण का लाभ न देने की लड़ाई विहिप पुरजोर तरीके से लड़ेगी।

हुतात्मा दिवस पर रक्तदान शिविर

हरिद्वार। हुतात्मा दिवस पर विश्व हिंदू परिषद–बजरंग दल, उत्तराखंड ने 2 नवंबर को माँ गंगे ब्लड बैंक, जगजीतपुर, लक्सर रोड, हरिद्वार में विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया।

श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आन्दोलन में श्रीराम भक्त कारसेवकों को तत्कालीन मुख्यमंत्री उत्तरप्रदेश सरकार मुलायम सिंह यादव की चुनौती 'अयोध्या में परिन्दा पर नहीं मार सकता' को स्वीकार कर जंगल–जंगल व नदी के रास्ते होकर अयोध्या पहुँचे राम नाम संकीर्तन करते निहत्थे श्रीराम भक्तों पर मुलायम सिंह यादव के आदेश पर 2 नवंबर को पुलिस बल द्वारा की गयी गोली वर्षा के फलस्वरूप सैंकडों हुतात्मा रामभक्त कारसेवक वीरगति को प्राप्त हो गये थे, जिनमें कोलकाता से आये शरद कोठारी व राम कोठारी भी सम्मिलित थे।

गौ आधारित कृषि से ही गौमाता की रक्षा होगी और राष्ट्र भी समृद्ध होगा

गोपाष्टमी पर विहिप ने कृषकों में बांटा गौअमृत

गंज बासौदा। गौ आधारित कृषि से गौमाता की रक्षा होगी और राष्ट्र भी समृद्ध होगा, उक्त उद्गार गुरुवार को रामजानकी मंदिर गौधाम आश्रम गौशाला में विश्व हिंदू परिषद द्वारा आयोजित गोपाष्टमी कार्यक्रम में विहिप क्षेत्र मंत्री राजेश तिवारी ने कहे। उन्होंने कहा कि किसान के खूंटे पर गाय बंधे रहें, बैलों का भी उपयोग हो, गौ उत्पाद का निर्माण एवं उपयोग हो, विहिप इसके लिये प्रयासरत है।

प्रांत सह गौरक्षा प्रमुख नीलेश अग्रवाल ने कहा कि रासायनिक खाद के उपयोग से मिट्टी की उर्वरा शक्ति नष्ट हो रही है, भूमि कठोर होती जा रही है। इसलिये रासायनिक कृषि का उपयोग छोड़कर जैविक कृषि की ओर लौटना पड़ेगा।

जैविक कृषि विशेषज्ञ बालकृष्ण विश्वकर्मा एवं गोविंद दांगी ने फसलों की उर्वरता बढ़ाने वाले जीवामृत के विषय में बताते हुए कहा कि 1 लीटर जीवामृत में 2 किलो गुड़ तथा 2 किलो मट्ठा डालकर 200 लीटर पानी में मिलाकर 7–10 दिन के लिये ढंककर रख देते हैं, 10 दिन बाद ऐक्टिव हो जाने पर तैयार मिश्रण को 1 एकड़ खेत में पानी के साथ बहाकर अथवा छिड़काव करके जैविक खाद के रूप में उपयोग में ला सकते हैं। इसके प्रयोग से खेतों में मित्र जीव बढ़ते हैं, जिससे खेत की उर्वरता भी बढ़ती है। विभाग कृषक प्रमुख विजय भावसार, उद्यान विस्तार अधिकारी नटेरन जगदीप सिंह राजपूत ने भी सभा को संबोधित किया। कार्यक्रम के अंत में कृषकों को गौशाला में बने जीवामृत की 1–1 लीटर की वॉटल भी वितरित की गयीं। इसे ऐक्टिव कर कृषक खेती में जैविक खाद के विकल्प के रुप में उपयोग कर सकेंगे। कार्यक्रम का संचालन जिला मंत्री अभिषेक शर्मा गुरुजी ने किया।

sharmabhishek.guruji99@gmail.com

समस्त हुतात्मा कारसेवकों को श्रद्धांजलि देने के लिए प्रतिवर्ष २ नवंबर को हुतामा दिवस मनाया जाता है। बजरंग दल के प्रांत संयोजक अनुज वालिया ने रक्तदान कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए कहा कि हुतात्मा दिवस पर उत्तराखंड प्रांत के साथ–साथ संपूर्ण भारत में विश्व हिंदू परिषद की युवा शाखा बजरंग दल के लाखों कार्यकर्ता रक्तदान कर बलिदानी कारसेवकों को भावभीनी श्रृद्धांजलि अर्पित करते हैं।

विश्व हिंदू परिषद, उत्तराखंड प्रांत के प्रांत संगठन मंत्री श्री अजय नागर, बजरंग दल के प्रांत बलोपासना प्रमुख सौरभ चौहान ने सभी रामभक्तों से रक्तदान शिविर में सम्मिलित होकर राम काज के लिये अपने प्राण न्योछावर करने वाले अमर हुतात्माओं को श्रद्धांजलि देकर श्रीराम मन्दिर हेतु बलिदानी संकल्प को न भूलने का आवाहन किया। रक्तदान शिविर में 93 कार्यकर्ताओं ने रक्तदान किया तथा 32 कार्यकर्ताओं ने रक्त परीक्षण करवा कर भविष्य में आवश्यकता होने पर रक्तदान का संकल्प लिया।

pankajvhpharidwar108@gmail.com

उत्तराखंड प्रांत का धर्म रक्षा निधि समर्पण कार्यक्रम

हरिद्वार। विश्व हिंदू परिषद उत्तराखंड प्रांत का धर्म रक्षा निधि समर्पण अभियान 2021 का शुभारंभ कार्यक्रम गौतम फार्म हाउस, कनखल, हरिद्वार में हुआ। कार्यक्रम में क्षेत्र संगठन मंत्री श्री मनोज वर्मा ने कार्यकर्ताओं को धर्म रक्षा निधि समर्पण अभियान को सफल बनाने का आह्वान करते हुए कहा कि देश में हिंदू समाज विभिन्न चुनौतियों का सामना कर रहा है और निरंतर आगे बढ़ते रहने के लिए इन चुनौतियों का जवाब देना नितांत आवश्यक है। हमारा सबसे पहला कर्तव्य अपनी धार्मिक, साँस्कृतिक विरासत को बचाना है। विश्व हिंदू परिषद की ओर से वर्ष में एक बार धर्म रक्षा निधि समर्पण अभियान का आयोजन किया जाता है। जिसके अंतर्गत संगठन के साथ साथ समाज के लोगों का भी योगदान लिया जाता है। इस वर्ष उत्तराखंड में यह अभियान 30 दिसंबर तक चलेगा।

उन्होंने कहा कि विश्व हिंदू परिषद ने अवैध धर्मांतरण पर रोक तथा धर्मान्तरित हिन्दू भाई–बहनों को अपनी जड़ों से पुनः जोड़ने की दिशा में बड़ा कार्य किया है। संपूर्ण भारत में अभी तक लगभग 62 लाख हिन्दुओं के धर्मांतरण को रोकने के साथ–साथ लगभग 8.5 लाख की घर वापसी भी हुई है। अनुसूचित जाति, जनजाति, वनवासी व गिरिवासी समाज के बीच सेवा, समर्पण व स्वावलंबन के मंत्र के साथ अनेक राज्यों में छल–बल पूर्वक धर्मान्तरण के विरुद्ध कठोर दण्ड की व्यवस्था वाले कानून विहिप के सतत प्रयासों के कारण ही बन पाए हैं। उन्होंने कहा कि बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर का मत था कि यदि देश के संत महात्मा मिलकर यह घोषित कर दें कि हिन्दू धर्म–शास्त्रों में छुआछूत का कोई स्थान नहीं है, तो इस अभिशाप को समाप्त किया जा सकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए 13–14 दिसम्बर 1969 के उडुपी धर्मसंसद में संघ के तत्कालीन सर–संघचालक श्री गुरूजी के विशेष

प्रयासों के परिणाम स्वरूप, भारत के प्रमुख संतों ने एक स्वर से 'हिन्दवः सोदरा सर्वे, ना हिन्दू पतितो भवेत्' के उद्घोष के साथ सामाजिक समरसता का ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित किया था।

1994 में काशी में हुई धर्म संसद का निमंत्रण डोम राजा को देने पूज्य संत ना सिर्फ स्वयं चलकर गए, बल्कि उनके घर का प्रसाद ग्रहण किया तथा अगले दिन डोम राजा धर्मसंसद के अधिवेशन में संतों के मध्य बैठे और संतों ने उन्हें पुष्पहार पहनाकर स्वागत किया। इस धर्मसंसद में 3500 संत उपस्थित थे। वनवासी, जनजाति, अति पिछड़ी व पिछड़ी जाति के हजारों लोगों को ग्राम पुजारी के रूप में प्रशिक्षण देकर उनका समय–समय पर अभिनन्दन व मंदिरों में पुरोहित के रूप में नियुक्ति विहिप के ग्राम पुजारी प्रशिक्षण अभियान के कारण ही संभव हुई। 9 नवम्बर 1989 में श्रीराम जन्मभूमि का शिलान्यास एक अनुसूचित जाति के कार्यकर्ता कामेश्वर चौपाल द्वारा कराए जाने के अतिरिक्त, देश भर में आयोजित समरसता यज्ञ, समरसता यात्राएँ, समरसता गोष्ठियाँ, हिन्दू परिवार मित्र योजना, अनुसूचित जाति व जनजातियों के लिए छात्रावास इत्यादि अनेक योजनाओं व कार्यक्रमों के माध्यम से हिन्दू समाज के बीच व्याप्त छूआछूत के अभिशाप से मुक्ति हेतु अभूतपूर्व कार्य किए हैं। सन 2003 से लगातार देशभर में भगवान वाल्मीकि, संत रविदास तथा संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर इत्यादि महापुरुषों, जिन्होंने देश की समरसता में योगदान दिया, की जयंतियाँ व्यापक रूप से मनाई जा रही हैं। इन सब कार्यक्रमों के परिणाम स्वरूप अब संत समाज सहज रूप से वंचित बस्तियों में प्रवास, प्रवचन व सह–भोज सहजता से करते हैं। द्वितीय विश्व हिंदू सम्मेलन भी प्रयाग की पावन धरा पर 27 से 29 जनवरी 1979 को 18 देशों के 60 हजार प्रतिनिधियों की सहभागिता से सम्पन्न हुआ। इसका उदघाटन पूज्य दलाई लामा जी ने किया। उनका स्वागत ज्योतिषपीठ के शंकराचार्य ने किया, यह भी एक ऐतिहासिक प्रसंग था।

उत्तराखंड प्रांत के संगठन मंत्री श्री अजय कुमार ने कहा कि हिंदू सम्मेलनों के जरिये हिंदू समाज को न सिर्फ राम मंदिर आंदोलन के दौरान संघर्षों के बारे में जानकारी दी जाएगी, बल्कि उन्हें यह भी बताया जाएगा कि श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण के बाद भी हिंदुओं के सामने खड़ी चुनौतियाँ समाप्त नहीं हुई हैं। धर्मांतरण, गोरक्षा, मठ–मंदिरों की सुरक्षा, लव–जिहाद जैसे तमाम मुसीबतें अब भी हिंदुओं के सामने खड़ी हैं। हमें गाँव–गाँव तक संगठन के विस्तार को लेकर हर स्तर पर पहल करनी होगी। इससे समाज का जागरण, हिन्दू सँस्कृति और सँस्कार का सुदृढ़ीकरण संभव होगा। इन सब मुद्दों पर हिंदुओं का जागरूक और एकजुट रहना जरूरी है।

रुद्रपुर उत्तराखंड में वरिष्ठ नागरिक सम्मान एवं स्वेटर वितरण
कार्यक्रम में स्वेटर वितरण करते विहिप केन्द्रीय सहमंत्री श्री स्नेहपाल जी

अशोकनगर (म.प्र.) में हुतात्मा दिवस पर
बजरंग दल द्वारा रक्तदान

गुवाहाटी (असम) में रसायन मुक्त खेती के लिए गो कृपा
अमृतम कल्चर का निःशुल्क वितरण

हरिद्वार (उत्तराखण्ड) में धर्म रक्षा निधि समर्पण कार्यक्रम में
उपस्थित विहिप क्षेत्र मंत्री श्री मनोज वर्मा जी

पलवल (हरियाणा) में
बजरंग दल की प्रांत बैठक

गुवाहाटी (असम) के पांचजन्य भवन में पंचगव्य आयुर्वेद चिकित्सा कार्यशाला

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6

email : hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/21-23
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 28.11.2021
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

LPS BOSSARD
Proven Productivity

PRODUCT SOLUTIONS

Whether a suitable standard solution or a customized component - fastening technology must be matched with a specific customer need. At LPS Bossard we have a solution to your every fastening challenge.

APPLICATION ENGINEERING

Product designers and production engineers all face a maze of challenges when designing and building their products. Making the right choice of fastening solution speeds up assembly and reduces life cycle costs. The application engineers at LPS Bossard have the expertise to help make that critical decision.

SMART FACTORY LOGISTICS

Smart Factory Logistics is an end-to-end service for managing your B- and C-parts. It is a time-tested and proven methodology that helps to leverage hidden potential for productivity improvement.

Rajesh Jain
M.D., LPS Bossard Pvt. Ltd.
Trustee, Vishva Hindu Parishad

LPS Bossard Pvt. Ltd.
NH-10, Delhi-Rohtak Road
Kharawar Bye Pass
Rohtak-124001 (INDIA)
T +91 1262 305164-198
F +91 1262 305111,112
india@lpsboi.com
www.bossard.com

प्रकाशक व मुद्रक परमानन्द मनोहर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'साइबर क्रिएशन्स' जे.ई.–9, खिड़की एक्सटेंशन, मालवीय नगर, नई दिल्ली–17 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी